ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०७९ मार्च २०२३

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'
देवपुत्र गौरव सम्मान

₹ ३०

देवपुत्र गौरव सम्मान की चित्रमय झलकियाँ

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०७९ ▪ वर्ष ४३
मार्च २०२३ ▪ अंक ०९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

किसी भी काम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस काम को करने वाले की इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति कैसी है। किसी एक का भी अभाव या कमजोर होना कार्य की सफलता को रोकती है। एक पुराना सुभाषित है जो बताता है कि **कोई भी कार्य करने से ही पूरा होता है केवल सोचते रहने से नहीं।** शेर जंगल का राजा माना जाता है, वह बहुत बलवान भी होता है लेकिन वह भी मुँह खोले केवल यह सोचते हुए सोया रहे कि कोई हिरन उसके मुँह में अपने आप चला आएगा तो चाहे वह भूखा मर जाए पर ऐसा नहीं होगा।

इसी बात का एक दूसरा पक्ष भी है किसी कारण हम काम कर तो रहे होते पर इच्छा नहीं है तो भी काम की सफलता प्रभावित होगी। वास्तव में इच्छा और क्रिया दोनों ही मन से संचालित होती है। मन यानि इन्द्रियों का राजा और पाँचों कर्मेन्द्रियाँ और पाँचों ही ज्ञानेन्द्रियाँ उसके मंत्रिमण्डल, सेनापति, अनुचर आदि। किसी भी राजा के लिए सिंहासन भी आवश्यक है और रथ भी। मन रूपी राजा के लिए इच्छा सिंहासन है कल्पना उसकी रानी है और क्रिया उसका रथ है। जैसे सिंहासन और रथ राजा की सफलता के लिए आवश्यक हैं वैसे ही इच्छा और क्रिया जीवन की सफलता के लिए।

मनुष्य के लिए बिना सोचे करना, और बिना किए सोचते रहना दोनों ही असफलता के कारण हैं। इसलिए अनुभवी लोगों का कहना है कि एक सफल व्यक्ति के पैर गतिमान, मस्तिष्क मतिमान, हृदय भक्तिमान और शरीर शक्तिमान होना चाहिए। वह केवल स्वप्न देखने का ही अभ्यासी न हो उन स्वप्नों को पूरा करने के लिए उद्यमी भी होना चाहिए। क्रियाशीलता के साथ जुड़े स्वप्न टूटने के लिए नहीं निर्माण के लिए जन्म लेते हैं।

बचपन सबसे अधिक कल्पनाशील होता है, स्वप्न देखने वाला होता है। बड़ा से बड़ा सपना देखें पर उसे पूरा करने के लिए प्रयास भी उतना ही बड़ा करें तो सफलता निश्चित प्राप्त होगी।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- होली पर प्रतिबंध -संजीव जायसवाल 'संजय' ०८
- बालपंच होली -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' १६
- महाराजा शेरसिंह की.... -कुमुद कुमार २२
- जल से संकट -तारादत्त जोशी ३२
- कुश का संकल्प -डॉ. सेवा नंदवाल ४०
- मातृभूमि, मात्रभूमि नहीं -राजा चौरसिया ४४

छोटी कहानी

- अपना रंग -अरुण कुमार यादव ०५

आलेख

- भारतीय हिन्दू नववर्ष -रामगोपाल 'राही' ३८

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स ०६
- कैसे जाएँ होली खेलने -राजेश गुजर १८
- होली के अनूठे रंग -देवांशु वत्स २५
- बिन्दु मिलाओ रंग भरो -राजेश गुजर ५०

कविता

- होलिका दहन -विजय जी. बलेरा ०७
- रंगों के सहगान -डॉ. हरीश निगम २४
- गौरैया -सृष्टि पाण्डेय २८
- रंग सभी प्यारे -कुमार गौरव अजीतेन्दु २९
- बारहमासी दोहे -डॉ. दशरथ मसानिया ३१
- रंगीली होली -राजेन्द्र 'निशेश' ४२

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १२
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १९
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान २१
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २६
- आपकी पाती २९
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भंडारी ३०
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३६
- शिशु गीत -तारादत्त 'निर्विरोध' ३७
- छः अँगुल मुस्कान ३७
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ४२
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ४३
- पुस्तक परिचय ४७
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

चित्रकथा

- तरकीब काम न आई -देवांशु वत्स १५
- सयाना कौन ? -संकेत गोस्वामी ३५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अपना रंग

– अरुण कुमार यादव

होली का त्यौहार आने वाला था, मोहल्ले के सारे बच्चों ने इस बार होली को एक अलग अंदाज में मनाने का निश्चय किया।

सभी बच्चों ने यह निर्णय लिया कि– ''अपने स्वास्थ्य का ध्यान और पूरी सावधानी रखते हुए हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बड़े ही धूम–धाम से होली मनाएँगे।''

तभी एक बच्चे ने कहा– ''मित्रो! क्यों न इस बार घर में ही रंग और गुलाल बनाए जाएँ?''

सभी बच्चों ने उसकी बात का समर्थन किया और सभी ने एक स्वर में कहा– ''हाँ! ये विचार अच्छा है।''

इस बार घर में ही गुलाल बनाते हैं और सभी लोग अपने–अपने घर वालों को चकित करते हैं।''

सभी घर आ गए और गुलाल को बनाने वाली सामग्रियों को जुटाने में लग गए।

किसी ने दादाजी से पूछा तो किसी ने इंटरनेट की सहायता ली। सभी जानकारियों को एकत्रित करने के बाद सभी बच्चों ने निर्णय लिया कि गुलाल फूलों से बनाएँगे।

फूलों से गुलाल बनाना सरल है और ये सभी के घरों में मिल भी जायेंगे।

तरह–तरह के फूल एकत्र किए गए। किसी के यहाँ गुलाब, किसी के यहाँ गुड़हल तो किसी के यहाँ गेंदा के फूल थे।

सभी ने अपने–अपने घरों के फूलों को तोड़कर उन्हें सूखने के लिए छतों में फैला दिया।

सूखने के बाद अब उन फूलों के पीसने की

बारी आई अब समस्या खड़ी हो गई इन्हें पीसे कैसे यदि अपनी-अपनी माँ को बताएँगे तो चौंकाने का आनंद समाप्त हो जाएगा।

फिर मंडली जमी और सभी ने योजना बनाई।

अनुज के दादा जी की सहायता लेते हैं और उनसे अनुरोध करेंगे वो किसी को बताएँ नहीं।

सभी लोग दादा जी के पास गए उन्हें अपनी समस्या बताई दादा जी उनकी सहायता करने के लिए मान गए और होली तक किसी को न बताने का वादा भी किया।

चुपचाप से फूलों की पीसा गया होली आते-आते गुलाल बनकर तैयार हो गया।

सभी बच्चे खुशी से झूम उठे और एक-दूसरे के गले मिले दादा जी का आशीर्वाद लिया।

अगले दिन होली थी बहुत सारी तैयारियाँ करनी थी इसलिए सभी बच्चे अपने-अपने घर लौट आए।

सुबह होते ही सभी लोग अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गए, किसी ने थाल लगाई तो किसी ने उन थालों में गुलाल भरा।

होली खेलने के समय आने तक सब कुछ तैयार हो गया और जल्दी-जल्दी सभी लोग स्वयं भी तैयार होने चले गए।

जब सभी के माता-पिता और घर के अन्य सदस्य होली खेलने के लिए मैदान में आए तो देखा, कितना सारा घर में बना शुद्ध गुलाल रखा है।

बच्चों की एक अद्भुत सोच और मेहनत को देखकर सब बहुत प्रसन्न हुए।

सभी ने बच्चों से कहा- ''इस अद्भुत कार्य के लिए हमें आप पर गर्व है।''

और सभी ने अपने-अपने बच्चों को गले से लगा लिया।

- उमरी (उ. प्र.)

बढ़ता क्रम 17

देवांशु वत्स

1. महात्मा गांधी की पत्नी।
2. राजा बलि का बड़ा पुत्र, तीर।
3. नमूना।
4. वार्त्तालाप, गपशप।
5. राजत्व।
6. किसी की बात को हंसी में उड़ा देना।

1.	बा					
2.	बा					
3.	बा					
4.	बा					
5.	बा					
6.	बा					

उत्तर: 1. बा, 2. बापू, 3. बानगी, 4. बात-चीत, 5. बादशाहत, 6. बातों में उड़ाना।

होलिका दहन

– विजय जी. वलेरा

प्राचीन काल में हिरण्यकश्यपु नामक राक्षस रहता था।
'मैं परमेश्वर से भी उत्तम, शक्तिमान हूँ' कहता था।।
ब्रह्मदेव का तप कर उसने, इक ऐसा वर पाया था।
देव न दानव, पशु ना मानव, वध उसका कर पाया था।।
मृत्यु न उसकी संभव घर ना बाहर, दिन या रात में।
मृत्यु न उसकी धरा गगन में, शस्त्र अस्त्र के घात में।।
लगा समझने अमर स्वयं को, देता जग को कष्ट महान।
महारानी कयाधु ने जन्मी, भगवद्भक्त एक संतान।।
माँ के पेट में ही नारद मुनि से, उसने पाया था ज्ञान।
पर हिरण्यकश्यपु था उसकी, इस विशेषता से अनजान।।
असुर पुत्र होकर भी था प्रह्लाद विष्णु का भक्त महान।
नित्य नाम नारायण का जप, करता था श्री हरि का ध्यान।।
बालक को समझाता दानव, 'मुझे भजो, तज हरि का नाम।'
हुआ न विचलित, तजी न श्रद्धा, हुआ न धमकी का परिणाम।।
कहा असुर ने ''पुत्र! शत्रु का भक्त, शत्रु ही है मेरा।
कुलनाशक है रे कपूत! अब वध ही उचित मुझे तेरा।।'

भक्त पुत्र का वध करने को, किए असुर ने कपट अनेक।
सर्प कटाए, गज ने कुचला, दिया उसे पर्वत से फेंक।।
पर जिसके रक्षक श्रीहरि हों, उसे कौन सकता है मार।
क्रोध दुष्ट का बढ़ता जाता, था असफल होकर हर बार।।
बहिन होलिका दानव की थी, दुष्ट भाई सी, मन अपवित्र।
आग से जलने दे ना उसको, प्राप्त ओढ़नी एक विचित्र।।
उसे ओढ़ बैठी पावक में, लिए गोद छोटा–प्रह्लाद।
बिना डरे प्रह्लाद था करता, श्री हरि को मन ही मन याद।।
राख हो गई स्वयं होलिका, जला भक्त का एक न बाल।
भक्ति विजय की पावन घटना, स्मरण सभी करते हर साल।।
फागुन मास पूर्णिमा की तिथि, पर्व होलिका का विख्यात।
जो बुराई की है प्रतीक, होलिका दहन होता इस रात।।

– डीसा
(गुजरात)

होली पर प्रतिबंध

– संजीव जायसवाल 'संजय'

अंकित होली से तीन दिन पहले अपने ताऊ जी के घर दिल्ली आया था। उनकी सोसायटी में होली बहुत धूम–धाम से मनाई जाती थी जिसकी तैयारी कई दिनों पहले से शुरू हो जाती थी। किन्तु इस बार वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था।

अंकित ने ताऊ जी के लड़के रोहित से कारण पूछा तो उसने बताया, ''पिछले वर्ष होली में नकली रंग के उपयोग के कारण कई लोगों के चेहरों पर छाले पड़ गए थे। इसलिए सोसायटी ने इस बार रंग न खेलने का निर्णय लिया है।''

''बिना रंग खेलें तो होली का पूरा त्यौहार ही बेमजा हो जाएगा।'' अंकित ने कहा फिर कुछ सोचते हुए बोला– ''ताऊ जी तो सोसायटी के अध्यक्ष हैं। तुम उनसे बात क्यों नहीं करते?''

''रंग न खेलने का निर्णय पिता जी का ही है।'' रोहित ने बताया।

''सोसायटी के बाकी लोगों ने इस निर्णय का विरोध नहीं किया?'' अंकित ने जानना चाहा।

''नहीं! सोसायटी के अधिकांश बड़े, वृद्ध रंग न खेलने के पक्ष में हैं।'' रोहित के स्वर में उदासी उभर आई।

अंकित तभी त्योहारों को बहुत धूमधाम के साथ मनाता था। होली में रंग न खेलने की बात सुन उसका मन उदास हो गया। कुछ देर सोचने के बाद उसने एक योजना बनाई जिसे सुन रोहित ने कहा– ''हाँ! यह योजना तो ठीक है किन्तु कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ।''

''भाई! किसी अच्छे काम को करने के लिए थोड़ा बहुत जोखिम तो उठाना ही पड़ता है।'' अंकित ने समझाया।

उस दिन शाम को सोसायटी के सभी लोग सभागार में एकत्रित हुए। एक घंटे पहले ही सभी के मोबाइल पर इस आपातकालीन बैठक के लिए जमा होने का संदेश मिला था।

''शर्मा जी! इस बार आपने नए मोबाइल से संदेश क्यों भेजा और बैठक का एजेंडा पहले से क्यों नहीं बताया?'' सोसायटी के सबसे वरिष्ठ सदस्य कमलेश जी ने अंकित के ताऊ जी से पूछा।

''भाई साहब! बैठक का संदेश मैंने नहीं भेजा था बल्कि मेरे मोबाइल पर भी आया था। मैंने संदेश भेजने वाले से बात करने की कई बार कोशिश की किन्तु उसका मोबाइल लगातार बंद आ रहा है।'' ताऊ जी ने चिंतित स्वर में बताया।

''तो फिर यह बैठक किसने बुलाई है?'' कमलेश जी ने पूछा तो पूरे सभागार में फुसफुसाहट प्रारंभ हो गई।

''मैंने और रोहित में बुलाई है। आप लोगों को जो परेशानी हुई, उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं।'' तभी अंकित ने खड़े होते हुए कहा।

''तुम लोगों ने यह हरकत क्यों की?'' ताऊ जी ने क्रोधित होते हुए दोनों की ओर देखा।

''होली में केवल दो दिन शेष हैं किन्तु अभी तक उसकी कोई तैयारी शुरू नहीं हुई है इसीलिए हम लोगों ने यह बैठक बुलवाई है।'' अंकित ने बताया।

''रोहित ने तुम्हें बताया नहीं कि इस बार हम लोगों ने सर्वसम्मत से रंग न खेलने का निर्णय लिया है।'' ताऊ जी ने अपने क्रोध को दबाते हुए कहा।

''बताया था लेकिन वह इसका कारण ठीक से नहीं बता सका।'' अंकित ने शांत स्वर में कहा।

ताऊ जी को अंकित की बातें बहुत बुरी लग रही थीं। किन्तु वह सभी के सामने उसे डाँटना नहीं चाहते थे इसलिए अपने क्रोध को नियंत्रित करते हुए बोले– ''पिछले वर्ष नकली रंग के कारण कई लोगों के चेहरे पर छाले पड़ गए थे इसलिए हम लोगों ने इस वर्ष रंग न खेलने का निर्णय लिया है।''

''त्यौहार हमारे जीवन में उत्साह और उमंग लाते हैं। होली पर रंग खेलना हमारी सदियों पुरानी परंपरा रही है। यदि एक बार यदि एक बार कोई दुर्घटना घटित हो जाए तो उसके कारण त्योहार मनाना ही बंद कर देना उचित नहीं हो सकता।'' इतना कहकर अंकित ने वहाँ जमा लोगों पर एक दृष्टि डाली फिर बोला– ''यदि नकली दवा खाने से किसी की मृत्यु हो जाती है तो इससे दवाइयाँ खाना बंद नहीं किया जाता। प्रशिक्षण के दौरान कोई विमान दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है तो उससे विमान उड़ाना बंद नहीं कर दिया जाता नकली दूध....।''

''चुप हो जाओ, तुमको अधिक भाषण झाड़ने की आवश्यकता नहीं है।'' ताऊ जी ने अंकित को डपट दिया उनका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा था।

''भाई साहब! बच्चे की बातों में दम है। उसे डाँटिए मत।'' तभी रोहित की पड़ोसन कल्याणी देवी ने टोंका। होली पर रंग न खेलने के निर्णय से वे भी काफी दुखी थी।

उनकी बात सुन वहाँ फुसफुसाहट होने लगी। सोसायटी के कई लोग इस निर्णय से सहमत नहीं थे। किन्तु सोसायटी के पदाधिकारियों द्वारा सर्वसम्मत से निर्णय लिए जाने के कारण वे लोग उसका विरोध नहीं कर पाए थे।

ताऊ जी ने लोगों के उभर रहे विरोध के स्वर को भाँप लिया था अत: तेज स्वर में बोले– ''यदि इस बार भी रंग खेलने से कोई नुकसान होता है तो उसका

जिम्मेदार कौन होगा?''

''आप सोसायटी के दूसरे पदाधिकारी।'' अंकित ने दृढ़ स्वर में कहा।

''यह क्या असभ्यता है? हम लोग जिम्मेदार कैसे हो सकते हैं?'' यह सुन सोसायटी के सचिव शोभित श्रीवास्तव जी भड़क उठे। अभी तक वह चुपचाप सारी बातें सुन रहे थे किन्तु अब उनसे रहा नहीं गया।

''काका! क्षमा कीजियेगा, मेरा उद्देश्य आप लोगों को दोषी ठहराने का नहीं है। लेकिन आप लोग चोर को दण्ड दिलवाने के बजाय जिसके घर चोरी हुई है उसे ही घर में बंद करने का दण्ड सुना रहे हैं।'' अंकित ने शांत स्वर में कहा। कल्याणी देवी तथा दूसरे लोगों का साथ पाकर उसकी घबराहट काफी कम हो गई थी।

''कैसा चोर और कैसा दण्ड? मैं कुछ समझा नहीं।'' शोभित श्रीवास्तव ने कहा।

''यदि रंग खराब था तो उसके लिए दोषी वे लोग थे जो इसे बनाते और बेचते हैं। आप लोगों ने उनके विरुद्ध पुलिस में कोई शिकायत अंकित नहीं करवाई उल्टे बच्चों के रंग खेलने पर ही प्रतिबंध लगा दिया। यह कहाँ का न्याय है?'' अंकित ने कहा।

''रंग की रिपोर्ट भला कौन लिखवाता है?'' शोभित श्रीवास्तव ने टोंका।

''यही तो कमी है चोरी या कोई दूसरी बड़ी दुर्घटना हो जाती है तब हम लोग पुलिस के पास जाते हैं लेकिन नकली सामान आने पर हम थोड़ी देर गुस्सा प्रकट करने के बाद शांत होकर बैठ जाते हैं, इसीलिए नकली सामान बनाने वालों की हिम्मत बढ़ जाती है।'' रोहित ने कहा। अंकित के साथ अब वह भी मोर्चा सँभालने आ गया था उसने वहाँ जमा लोगों पर एक दृष्टि दौड़ाई फिर बोला– ''अंकित सही कह रहा है नकली रंग बचने वालों के विरुद्ध आप लोगों ने रिपोर्ट नहीं लिखवाई थी इसलिए आप लोगों की जिम्मेदारी तो बनती है।''

यह सुन श्रीवास्तव जी सोच में पड़ गए। उन्हें कोई जवाब नहीं सूझ रहा था तभी बुजुर्ग दुर्गादास जी ने कहा– ''श्रीवास्तव जी! बच्चे सही कह रहे हैं हमें रंग खेलने पर प्रतिबंध लगाने के बजाय नकली रंग बेचने वालों के विरुद्ध शिकायत करनी चाहिए थी।''

ताऊजी को भी अब बच्चों की बात समझ में आ गई थी। अत: सांस भरते हुए बोले, ''बात तो सही है लेकिन अब क्या हो सकता है? यह घटना तो पिछले वर्ष की है।''

''अभी भी बहुत कुछ हो सकता है।'' अंकित ने कहा। ''वह कैसे?''

''जिस दुकानदार ने पिछले वर्ष नकली रंग बेचा था वह लाभ के लालच में इस वर्ष भी नकली रंग अवश्य बेचेगा। हम वहाँ से थोड़ा रंग खरीद कर उसकी जाँच करवा सकते हैं और यदि वह नकली हुआ तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई जा सकती है।'' अंकित ने राय दी।

''लेकिन इतनी जल्दी रंगों की जाँच कहाँ हो पायेगी?'' ताऊ जी ने टोका।

''उसकी चिंता मन करिए। हमारी प्रयोगशाला में इसकी सुविधा है। मैं एक दिन में ही उसकी रिपोर्ट ले आऊँगा।'' सुदीप सक्सेना ने हाथ खड़ा करते हुए कहा। वे एक सरकारी प्रयोगशाला में वैज्ञानिक थे।

योजना बन गई कि शोभित श्रीवास्तव आज ही उसी दुकान से फिर रंग खरीद कर लाएँगे और सुदीप सक्सेना कल उसकी जाँच करवा लाएँगे। आगे की कार्रवाई उसकी रिपोर्ट देखने के बाद तय की जाएगी। इसी के साथ बैठक समाप्त होने लगी।

''पुलिस की कार्रवाही अपनी जगह होती रहेगी

लेकिन हम लोगों के रंग खेलने के बारे में भी तो कोई निर्णय कर दीजिए।'' तभी अंकित ने टोका।

''वह निर्णय तो पहले ही हो चुका है। खतरों को देखते हुए रंग नहीं खेला जाएगा।'' ताऊ जी ने निर्णय सुनाया।

यह सुन अंकित और रोहित का चेहरा लटक गया। तभी कल्याणी देवी ने आगे बढ़ उनके सिर पर हाथ फेरा फिर बोली, ''बच्चो! मन छोटा मत करो। होली रंगों का त्यौहार है और हम रंग अवश्य खेलेंगे।''

''लेकिन बहन जी!'' ताऊ जी ने कुछ कहना चाहा। किन्तु कल्याणी देवी ने उनकी बात काटते हुए कहा– ''बच्चे हम लोगों से अधिक समझदार हैं। उन्होंने हमारी कमी हमको बतलाई तो अब हमें भी उनकी खुशियों का ध्यान रखना चाहिए। अभी समय है हम लोग कचनार और टेसुओं के फूलों को भिगोकर रंग बना लेंगे फिर होली जमकर खेलेंगे।''

''अरे वाह! चाची आप तो बहुत अच्छी हैं।'' अंकित का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा उसने अपना हाथ ऊपर उठाते हुए आवाज लगाई, ''कल्याणी चाची.....''

''जिंदाबाद'' कई स्वर एक साथ उभरे और पूरा सभागार हँसी और खिलखिलाहटों से गूँज उठा।

अंकित की योजना सफल रही। शोभित श्रीवास्तव जी उसी शाम रंग लेकर आये। उसकी जाँच कराई गई तो पता लगा कि इस बार भी उसमें सस्ते हानिकारक रासायनिक पदार्थ मिले हुए हैं। सोसायटी के पदाधिकारियों ने पुलिस में रिपोर्ट की तो उस दुकानदार को पकड़ लिया गया। उसकी निशानदेही पर नकली रंग बनाने वाली फैक्ट्री पर छापा मारा गया जहाँ से बहुत बड़ी मात्रा में हानिकारक रंग मिला यदि वह रंग बाजार में आ जाता तो उससे बहुत सारे लोगों को नुकसान पहुँच सकता था। अगले दिन के अखबार अंकित की प्रशंसा से भरे हुए थे। पुलिस द्वारा भी दोनों को सम्मानित करने की घोषणा की गई थी।

एक पत्रकार अंकित का साक्षात्कार लेने आ गया था। साक्षात्कार लेने के बाद उसने कहा– ''क्या आप समाज को कोई संदेश देना चाहेंगे?''

''हम सब जानते हैं कि अन्याय करना पाप है लेकिन हमें यह भी जानना चाहिए कि अन्याय सहना भी पाप होता है। क्योंकि इससे गलत काम करने वालों की हिम्मत और बढ़ती जाती है। होली के अवसर पर न केवल नकली रंग बिकते हैं बल्कि नकली खोया भी खूब बिकता है। पुलिस को चाहिए लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाले ऐसे लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाही करे।''

उस पत्रकार ने रोहित का साक्षात्कार उसी समय सोशल मीडिया पर प्रसारित कर दिया जो देखते ही देखते वायरल हो गया। उसके बाद तो नकली सामान बेचने वालों के ऊपर आफत आ गई। पुलिस ने धड़ाधड़ छापे मारकर कई क्विंटल नकली खोया बरामद कर दोषियों को जेल भेज दिया।

अंकित ने समझा दिया था कि समस्या से घबराकर भागना उसका हल नहीं है। बल्कि उसका सामना करना और विकल्पों की खोज करना ही समझदारी है। कल्याणी देवी ने सोसायटी की दूसरी औरतों के साथ मिलकर कचनार और टेसुओं के फूलों से ढेर सारा रंग तैयार कर दिया था। होली वाले दिन सोसायटी के बच्चों और बड़ों सभी का उत्साह देखते बनता था। अंकित की लोकप्रियता देख पड़ोस की सोसायटी के लोग भी होली खेलने आ गए। अंकित और रोहित ने सबके साथ मिलकर खूब धमाल मचाया।

– लखनऊ (उ. प्र.)

सशक्त नारी और सिद्धहस्त लेखिका डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

प्यारे बच्चो,

शतायु को प्राप्त डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ (१ फरवरी १९२३–८ जनवरी २०२३) का नाम प्रभाती और लोरी के लिए विशेष तौर पर लिया जाता है। वे बाल साहित्य की सिद्धहस्त लेखिका थीं।

कहानी, कविता और एकांकी तीनों ही विधाओं में उन्होंने आपके लिए उत्कृष्ट लेखन किया। यों वे प्रौढ़ साहित्य की भी स्थापित रचनाकार थीं। उनके गीत और कहानियाँ खूब लोकप्रिय हुए।

उनकी लिखी ब्रज की लोककथाओं के तो क्या कहने, जिन्हें बच्चे–बड़े सभी ने पसंद किया।

उनका जन्म मथुरा (उ. प्र.) के दघैटा गाँव में डॉ. हरस्वरूप कुलश्रेष्ठ और माया देवी की संतान के रूप में हुआ था।

उनके पिता जी स्वास्थ्य विभाग में अधिकारी थे। आए दिन उनका स्थानान्तरण होने के कारण सरोजिनी जी का बचपन लखीमपुर खीरी, देवरिया, शाहजहाँपुर और मेरठ जैसे अनेक शहरों में व्यतीत हुआ। सरोजिनी जी बचपन से ही लेखन कार्य करने लगी थीं।

उनका कविता लेखन शाहजहाँपुर में शुरू हुआ। उन्होंने एक स्थान पर लिखा भी है कि वहाँ प्रभा नाम की उनकी एक सहेली थी। दोनों अपनी–अपनी छतों पर बैठकर भक्तिपरक तथा राष्ट्रीय कविताएँ लिखते थे।

सरोजिनी जी का विवाह छोटी आयु में ही हो गया था। लेकिन उनके पति के दूसरा विवाह कर लेने के कारण उन्हें महादेवी जैसा वियोग भी सहन करना पड़ा। वे आधुनिक युग की महादेवी थीं। एक सशक्त नारी के रूप में उन्होंने जीवन के संघर्षों पर विजय प्राप्त की। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सफलता पाई। कीर्तिमान रचा।

एम. ए. पी–एच.डी की उच्च शिक्षा प्राप्त कर वे प्रवक्ता और फिर बाद में प्राचार्य बनीं।

सरोजिनी की बाल कविता, लोरी और प्रभातियों की प्रमुख पुस्तकें हैं, 'कागज की नाव चली', 'रिमझिम–रिमझिम', 'मीठी–मीठी लोरियाँ और प्रभातियाँ', 'आ जा री निंदिया', 'भोर भई, अब जागो प्यारे', 'नन्हें–मुन्ने गाएँ गीत', 'प्यारे–प्यारे ये जीव जगत के', 'दस प्रेरक बाल कहानियाँ' और 'हंसा मोती चुगता है' आदि।

'ब्रज की लोककथाएँ' और 'अम्मा के गीत' पुस्तकों का तो लोक साहित्य की दृष्टि से बड़ा महत्व है।

साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें 'देवपुत्र गौरव सम्मान' और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से 'बाल साहित्य भारती' जैसे अनेक सम्मान विभिन्न

संस्थाओं से प्राप्त हुए। उन्होंने सौ वर्ष का सक्रिय जीवन जिया। सच कहें, उनका साहित्य ही नहीं बल्कि जीवन भी प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। उनका जीवन भी किसी साहित्य से कम नहीं।

उनकी बाल कविताएँ नए और अछूते विषयों पर होने के कारण बाल साहित्य की धरोहर हैं।

आइए पढ़ते हैं डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की कुछ चर्चित बाल कविताएँ–

लोरी

नन्हीं बिटिया सो जा सो जा

नन्हीं–बिटिया सो जा! सो जा!
मेरी बाहों में तू सो जा।
कब से हिला रही मैं सो जा,
लोरी सुना रही मैं सो जा।
निंदिया तुझे बुलाये सो जा,
करे इशारे तुझको सो जा।
अब भी आँखें खोल रही क्यों?
ऊँ–ऊँ करके बोल रही क्यों?
तेरा प्यारा टोनी सोया,
दादी सोई भैया सोया
लूसी भी तो सोई बिटिया,
तू भी सो जा मेरी बिटिया।
सो जा राजदुलारी सो जा,
मेरी बाँहों में ही सो जा।
सो जा सो जा पल भर में ही,
गहरी निंदिया आयेगी।
तुझे उड़ाकर बात–बात में,
परी लोक ले जायेगी।
इसीलिए तू जल्दी सो जा,
नन्हीं बिटिया सो जा सो जा।

जागो भैया

सोने की थाली-सा सूरज,
धीरे-धीरे नभ में आया।
फैल गया चहुँ दिश उजियाला
और धरा की निखरी काया।
इसके आते ही सारा घर,
चम-चम करता चमक रहा है।
ओढ़े था जो काली चूनर,
अब फूलों-सा महक रहा है।
सबसे मीठा-मीठा बोलो,
ऐसे में तुम आँखें खोलो।
सूरज को उठ करो प्रणाम!
करने तुमको कितने कम।
जागो तुम्हें जगाए मैया,
आलस छोड़ो अब तो भैया।

जुगनू

जगमग जगमग जुगनू जगते,
इधर-उधर हैं उड़ते-फिरते।
होता है घुप्प जहाँ अँधेरा,
कर देते ये वहीं उजेरा।
ऐसा लगता आसमान के
तारे धरती पर आ उड़ते।
टॉर्च जलाते और बुझाते,
ऐसे ही जलते, बुझ जाते।
जमकर खूब तमाशा करते,
पत्तों-फूलों में छिप जाते।
कैसा अद्‌भुत खेल दिखाते,
फूल रोशनी के हैं लगते।
हम जब इन्हें पकड़ पाते हैं,
कपड़े में लपेट लाते हैं।
हीरे जैसे चमचम करते।

श्याम चिरैया

श्याम चिरैया चूं चूं चू,
मोती पिल्ला कूं-कूं-कूं।
सोनू तोता रटता है,
बंदर खो-खों करता है।
बिल्ली बोले म्याऊँ म्याऊँ,
दूध पिलाओ तो मैं आऊँ।
मेढक बोला टर-टर-टर,
नहीं किसी का मुझको डर।

भूकंप

माँ! धरती क्यों डोल रही थी,
'घुर घुर' कर क्यों बोल रही थी?
इसके ऊपर हम रहते हैं,
कूद-फाँद करते रहते हैं।
तब सह लेती सब शैतानी,
कभी न की इतनी मनमानी।
अब क्यों हमको तोल रही थी,
माँ, धरती क्यों डोल रही थी?
क्या पहाड़ का बोझ बढ़ गया,
क्या समुद्र का नाप बढ़ गया?
बोलो माँ, क्या हुआ इसे था,
गुस्सा आया व्यर्थ इसे था:
दु:ख में सबको घोल रही थी,
माँ, धरती क्यों डोल रही थी?
लोग मर गए इतने सारे,
बिछुड़ गए आफत के मारे।
कुछ रोते रह गए बिचारे,
घर भी टूट गए हैं सारे!
क्यों ऐसा विष घोल रही थी,
माँ, धरती क्यों डोल रही थी?
- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

तरकीब काम न आई

चित्रकथाः देवांशु वत्स

बालपंच होली

– डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

गाँव के एक मोहल्ले में बालपंच रहते थे, यानि पांच बच्चों की टोली। नाम थे उनके गब्बू, सब्बू, झब्बू, डब्बू और घप्पू। पांच के पांच नंबर एक के उस्ताद, दिमागी और शरारती। ये पक्के पंच थे, इन्होंने जो कह दिया सो पत्थर की लकीर। यूँ तो और भी शैतान बच्चे थे– चंगू, मंगू, रंगीला, छबीला, सजीला तो वहीं लड़कियाँ भी पीछे ना थीं– शीना, मीना, टीना, रीना, नगीना सभी एक से बढ़कर एक। लेकिन, सभी को पंचों की बात मानना ही पड़ती थी। होली का त्यौहार आने वाला था। पंचों ने चुपचाप एक बाल सभा आयोजित की जिसकी सूचना देना का खुफिया काम चंगू, मंगू को सौंपा गया। आनन–फानन में गांव के पीछे धोबी मोहल्ला से सटकर एक खंडहर में सभा आयोजित की गई। वहाँ विशाल पीपल के वृक्ष के चबूतरे पर गब्बू, सब्बू, झब्बू, डब्बू, घप्पू पाँचों बालपंच विराजमान थे।

गब्बू ने पधारे हुए सभी बच्चों का अभिनन्दन किया और कहा– देखो भाई, इस बार होली के त्यौहार में बहुत सादगी और गंभीरता के साथ हुड़दंग करना है। इस बात पर सभी हँस दिये। घप्पू की तो जोरदार हँसी छूट पड़ी– भाई, क्या बात है, गंभीरता के साथ हुड़दंग? सब्बू ने कहा, सभी को अपना–अपना काम जिम्मेदारी से करना होगा, जैसे रंगीला, तुम्हें एक गधा लाना होगा जो अच्छे करतब दिखाता हो। गधा! सभी आश्चर्य से पंचों का मुँह देखने लगे।

रंगीला ने कहा– ''गधे का क्या करेंगे? तुझे बिठाएँगे, दूल्हा बनाकर! सारे बच्चे खिलखिला उठे। लेकिन, रंगीला ने हामी भर दी। हाँ छबीला, तुम्हें एक हाथ ठेले की व्यवस्था करना होगा। रीना, मीना, शीना, टीना, नगीना तुम सबको पांच–पांच गुजियों की व्यवस्था करना होगा। साथ ही होली के गीत भी बना लेना, मजेदार–मजेदार। लड़कियों ने मुस्करा कर स्वीकार किया। चंगू, मंगू को रंग के लिये बाल्टियाँ लानी होंगी।'' दोनों बोले– ''बड़े–बड़े डिब्बे चल जायेंगे? हाँ, हाँ, चलेंगे। हठीला और सजीला तुम लोग टोपियाँ तैयार करना रंग–बिरंगी, ठीक है और रंग–बिरंगे बताशों की माला ले आना और हाँ, माईक के स्थान पर भोंपू कागज के बना लेना।''

झब्बू ने कहा– ''ये तो सब ठीक है लेकिन, रंग की व्यवस्था कौन करेगा?'' डब्बू और घप्पू ने कहा– ''कुछ काम हम पंच भी कर लेंगे।'' ''वह कैसे?'' दोनों ने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा– ''वह देखो! पलाश का पेड़ फूलों से लदा पड़ा है। इसी का बनाएँगे।'' विचार तो अच्छा है। चंगू, मंगू तो चुटकुले बनाने और सुनाने में उस्ताद हैं ही। देखो भाई, होली में ऐसी रंगारंग बारात निकालेंगे जिसमें ढोल–ढमाके के साथ रंग पिचकारियों चलेंगीं। तो हो जाओ शुरू।

हठीले ने कहा– ''एक दिक्कत है, ढोल कहाँ

से आयेगा?'' चंगू-मंगू ने कहा- ''कनस्तर कब काम आयेगा? और पिचकारियाँ तो सबको अपने घर से लाना होंगीं।'' गब्बू ने कहा- ''और गुलाल, इस बार हम गुलाब की पत्तियों और लाल फूलों को सुखाकर तैयार करेंगे। हमारे खेत में हल्दी की गाँठें तैयार हैं, उनका पीला रंग गालों में मलेंगे ताकि पिछली बार की तरह किसी की त्वचा खराब न हो।''

सबने कहा- ''हाँ यह अच्छा रहेगा।'' सारे बच्चे पंचों के कहे अनुसार तैयारी में जुट गये। खंडहर के पास पंचों ने चूल्हा बनाया, टेसू के ढेर सारे फूलों को एक टब में पानी भरकर उबाला। अच्छा रंग तैयार हो गया। गुलाल और हल्दी भी तैयार हो गई। सबके घरों के गुजिया और मिठाइयों की खुशबू आने लगी थी। सभी की जीभ में पानी आ रहा था। पर किसी के घर में यह मालूम नहीं था कि बालपंच इस बार कैसी होली खेलेंगे? अंत: होली की प्रतीक्षा समाप्त हुई।

रात्रि में होलिका दहन हुआ और दूसरे दिन सारे बच्चे घर से नाश्ता करके पुराने कपड़े पहनकर निकल

पड़े और खंडहर के पास एकत्रित हो गए क्योंकि बारात तो वहीं से उठना थी। रंगीला गधा लेकर आया और उसे इस तरह सजाया कि सभी हैरान थे। वह गधा उसी के यहाँ का था जो बेहद सुरीला गाना गाता था और करतब भी दिखाता था।

रंगीला ने कई पक्षियों के रंग-बिरंगे पंखों को सुंदर कलगी की तरह सजाकर पगड़ी बाँध ली और गधे पर सवार हो गया तो पिट्टू गधा गर्व से फूला न समाया। छबीला अपने पिता का हाथ ठेला ले आया जिस पर रंग की बाल्टियाँ रखी गईं। सारी लड़कियाँ हाथ ठेले पर बैठ गईं, पिचकारियाँ लेकर। छबीला और हठीला ठेला चलाने के लिए आस-पास तैनात थे तो चंगू, मंगू के ढोल कनस्तर गले में लटके हुए थे जा सजी-धजी लकड़ियों से बजाए जाने थे।

पाँचों पंच गब्बू, सब्बू, डब्बू, झब्बू और घप्पू रंगीला दूल्हा के पीछे गुलाल की झोलियाँ लिए खड़े थे। सबने एक-दूसरे को गुलाल लगाया, बताशों की माला पहनाई। बारात धोबी मोहल्ले से रवाना हुई तो वहाँ बंधा चैतू घोड़ा भी पिट्टू गधे को देखकर शरमा गया। चैतू से हिनहिनाया न गया, वह पूँछ फटकार कर रह गया, हाय, इस पिट्टू के बड़े भाग्य हैं जो होली खेलने जा रहा है। ढोल पीटने लगे, रंग उड़ने लगे, घरों से बड़े-बूढ़े झाँकने लगे, दादियाँ, चाचियाँ, भाभियाँ सभी कहने लगे- ''अरे! अरे! देखो देखो होली का हुड़दंग बज रहे ढोल, ढपली, ढप्प, चंग। पंचों ने अजब बनाये स्वांग, किसी की लंबी चोटी लटके, किसी की मूँछों से ताव टपके, किसी का पायजामा लगता जैसे हो लामा, करते अजब-गजब का ड्रामा, ढोल बजते अजब ढंग के, उड़ते रंग सभी रंग के। गाना के बीच पिट्टू गधा ऐसी तान छेड़ता कि हँसी के फव्वारे छूटने लगते। उसकी तान सुनकर गली के शेरू, कल्लू भी भौंकने की राग छेड़ते पीछे-पीछे हो लिये।

बीच-बीच में पिट्टू गधा ऐसी ठुमक दुलत्ती चलाता कि दूल्हा उछल पड़ता और लड़कियाँ झाँकते

हुए लोगों पर पिचकारियों से रंगीन फव्वारे छोड़ती जातीं। ऐसी हुरयारी हुड़दंग की तो किसी के माता–पिता ने कल्पना भी न की थी।

सब सोच रहे थे कि कहीं पिछली बार की तरह गुब्बारों में भरकर रंग न फेंकें जिससे कितनों को तो चोट लगी थी। कबरी गैया की तो आँख ही फूट गई थी। बालपंचों की यह हुड़दंग देखकर पंचों के दादा–दादी घर से निकल पड़े और एक साथ बोले– ''होली है....।'' सड़क पर सभी दादा झूम–झूमकर गाने लगे– ''होली खेले रघुवीरा अवध में, होली खेले रघुवीरा...।'' रंग ऐसा चढ़ा कि सभी दादियाँ भी घर से निकल कर गाने–नाचने लगीं। पिचकारियाँ चलने लगीं। गुलाल उड़ने लगी, सभी ने खूब रंग मस्ती की।

अब बारात जहाँ–जहाँ से निकलती, सभी घरों से स्वागत में खूब गुजिया, रसगुल्ले बँटने लगे। पूरा गाँव बालपंचों की होली में रंगीन हो गया।

आम के पेड़ों पर बैठी कोयल राग छेड़ने लगी। बारात लौटी तो सभी दादा जी अपने जमाने की होली याद करने लगे। वो अपने पोपले मुख से अपने होली के स्वांग सुनाने लगे। उनकी आँखों में खुशी के आँसू और बच्चों के प्रति प्यार उमड़ पड़ा।

सब एक–दूसरे के गले मिले। चंगू, मंगू ने चुटकुले सुनाकर हँसाया तो लड़कियों ने गीत गाकर रिझाया। होली में सब एकता के रंग में रंग गये। वीराने खंडहर में होली के रंग बिखर गये।

– कटनी (म. प्र.)

माथापच्ची

कैसे जाएँ होली खेलने

– राजेश गुजर

बृज में होली खेलने कृष्णजी अपने सखाओं के साथ जाना चाहते हैं, आप ही सही मार्ग से पहुँचाओ।

गोपाल ने हार नहीं मानी

– तपेश भौमिक

एक सुबह गोपाल ने जागकर सोए–सोए ही पत्नी को बुलाकर कहा– ''जानती हो, मैंने सुबह–सुबह क्या सपना देखा है?''

''सपना तुमने देखा और मैं कैसे बताऊँ?'' पत्नी ने चिढ़ते हुए कहा।

''बताता हूँ, बताता हूँ। मैंने सपना देखा कि मैं मोटा से पतला बन गया हूँ।'' गोपाल ने खुशी से कही। पत्नी ने उसकी बातों का खिल्ली उड़ाते हुए कहा– ''यह सपने में ही संभव है।''

''नहीं, मैं अपना मोटापा कम करके रहूँगा।''

''तब पाँच लोगों का भोजन अकेले कौन खाएगा? इसके लिए तो उपवास, व्यायाम आदि करना पड़ता है।'' पत्नी ने विनोद करते हुए कहा।

''मैं हारने वाला नहीं हूँ। तुम चाहो शर्त लगा लो। आज और अभी से शुरू हो जाता हूँ। केवल एक समय थोड़ा फलाहार करूँगा और कुछ नहीं।'' गोपाल ने इतना कहकर स्नान तथा पूजा–पाठ आदि से निबटकर बिना कुछ खाए पिये ही राज दरबार के लिए प्रस्थान कर गया। रास्ते में भोला हलवाई मिला। उसने राह रोकते हुए कहा–''गोपाल भैया! आज बहुत बढ़िया रसगुल्ला बना है, आप तो अधिकांश दस से बीस रसगुल्ला खाकर ही दरबार में जाते हैं।'' गोपाल ने बुदबुदाकर कहा– ''सर मुडाते ही ओले पड़े।'' फिर दिमाग पर बल डालते हुए कहा– ''नहीं खाऊँगा, व्रत रखा है।'' इतना कहकर वह तेज कदमों से आगे बढ़ गया।

दरबार में पहुँच कर उसने देखा कि महाराजा समेत सभी दरबारी पूड़ी और आलू दम उड़ा रहे हैं। गोपाल के आते ही मंत्री ने कहा– ''गोपाल के लिए पाँच पत्तल ला दो भाई, वह अकेले ही पाँच का भोजन कर लेगा।'' उधर शुद्ध घी की महक ने गोपाल को मानो पागल बना दिया हो। उसने अपने आप को नियंत्रित करते हुए कहा– ''मैंने व्रत रखा है।'' उधर दिन चढ़ता गया और साथ–साथ गोपाल के पेट में चूहे कूदने लगे।

व्रत के नाम पर गोपाल उस दिन जल्दी ही

छुट्टी लेकर घर पहुँच गया। पत्नी ने बहुत मनाया कि वह खाना खा ले, उपवास रहना उसके बस की बात नहीं है। लेकिन गोपाल केवल कुछ फल खाकर ही आराम करने लगा।

उधर शाम तक दरबार में यह समाचार पहुँच चुका था कि गोपाल मोटापे से छुट्टी पाने के लिए उपवास कर रहा है। मंत्री ने महाराज से गोपाल की हँसी उड़ाते हुए कहा, ''लोग 'मोटेमल' कहकर बेचारे का मजाक उड़ाते हैं इसलिए....।'' तभी महाराज ने माहौल का आनंद उठाते हुए कहा, ''मंत्री सुनो! हम इस अवसर पर रसगुल्ला खाने की प्रतियोगिता का आयोजन करें तो कैसा रहेगा? उसके मुकाबले एक ही रसगुल्ला खाने वाला इस दरबार में है।''

सभी पंडितजी की ओर देखकर हँसने लगे। तभी मंत्रीजी ने कहा, ''महाराज! हम भी तो खा सकते हैं, हम दूसरे या तीसरे स्थान का अधिकार तो कर ही सकते हैं।'' इस पर महाराज ने आदेश जारी किया कि– ''इस बार केवल दो के बीच ही मुकाबला होगा। जिसमें गोपाल से बाजी मारने का साहस है वह अपना नाम लिखा दे। हमारा उद्देश्य गोपाल के प्रण को तोड़ना है। वह रसगुल्ला देखकर अपने आपको नियंत्रित नहीं रख पाएगा।''

मंत्री का दिल छोटा हो गया। प्रतियोगिता के बहाने भले ही उसे कोई स्थान न मिलता, जितना मन चाहे खा तो सकता था। वह अपना नाम लिखाना चाहता था पर मन मसोस कर रहा गया। अब मंत्री को ही कहा गया कि वह भोला हलवाई के यहाँ रसगुल्लों का आदेश दे दे। मंत्री ने भोला हलवाई के यहाँ जाने में देर नहीं की। उसने चुपके से भोला को कह दिया कि एक कुंडे (मिट्टी का कटोरे जैसा बर्तन) में कुछ वैसा रसगुल्ला रख दे जिन्हें खाने पर खाने वाले को पेचीस हो जाए। उसने एक कुंडे पर एक निशान भी बना दिया और कहा कि उन विशेष रसगुल्लों को उस कुंडे में रखा जाए। भोला ने हामी भर दी।

भोला ने वैसे रसगुल्ले बनाए कुछ बड़े आकार के और एक थाली में सजाकर रख दिया। मंत्री रसगुल्ला लाने गया तो उसके जीभ से लार टपकने लगी। इसी बीच भोला घर के अंदर किसी काम से गया कि मंत्री ने थाली में रसगुल्लों को कुछ बड़ा देखकर फटाफट बेसब्री से उठाकर गटक गया। अब मंत्री यह सोचकर खुश था कि गोपाल अगर जीत भी जाता है तो पेचीस के कारण चारों खाने चित्त पड़ जाएगा।

भोला ने घर से बाहर निकल कर थाली को खाली देखकर मंत्री जी से पूछा कि– ''थाली में रखे रसगुल्ले कहाँ गए?'' मंत्री जी ने कहा कि उसने कुंडे में रख दिये हैं। भोला को यह समझते देर नहीं लगी कि उसकी अनुपस्थिति में मंत्री जी उन्हें गटक गये हैं। अब तो बाजी उल्टी पड़ गई। उसने चुप्पी साथ लेना ही उचित समझा।

गोपाल तो उपवास कर ही रहा था। अब पंडित जी भी उपवास में रह गए, उसने सोचा था कि एक दिन नहीं खाऊँगा तो अगले दिन अधिक खा सकता हूँ। प्रतियोगिता जीतनी थी, इसलिए पंडित जी ने पहले दिन कुछ खाया–पिया नहीं।

कुंडों में रसगुल्ले रखे थे। रसगुल्लों को देख कर मंत्री जी और अन्य दरबारियों के लार टपकने लगी। महाराज ने घोषणा कर दी कि कोई गोपाल से मुकाबला करना चाहे तो कर सकता है। शर्त यह है कि खाली पेट कौन सबसे अधिक रसगुल्ला खा सकता है? मंत्री ने विशेष निशान वाले कुंडे को गोपाल के सामने और बिना निशान वाले कुंडे को पंडित के सामने रख दिया। मंत्री यह सोचकर खुश था कि गोपाल अगर जीत भी जाता है तो मैदान से घर और घर से मैदान होते–होते उसकी हालत बिगड़ जाएगी। कोई एक महिना दरबार में मेरी ही चलती रहेगी।

सब यही देखना चाह रहे थे कि गोपाल क्या करता है। पंडित और गोपाल दोनों कुंडों के पास बैठ गए। पंडितजी ने रसगुल्ले गटकना शुरू कर दिए पर

गोपाल चुपचाप बैठा था। ऐसा देखकर महाराज ने पूछा कि क्या वह हार मान लेगा। तब गोपाल ने एक ही बार में दो रसगुल्ले उठाकर अच्छी तरह चबा-चबाकर बड़े आराम से खा लिये। फिर उसने खाना बंद कर दिया। तब तक पंडित जी कोई सौ रसगुल्ले गटक चुके थे। अब महाराज ने पूछा कि क्या वह और रसगुल्ला नहीं खाएगा। गोपाल ने बड़े शांत होकर कहा कि वह और नहीं खाएगा। तब तक मंत्री के पेट में मरोड़ पैदा होने लगी थी। महाराज ने गोपाल से पूछा कि क्या वह हार मान लेगा? तब गोपाल ने कहा कि उसने तो प्रतियोगिता जीत ली है।

जब महाराज ने गोपाल से पूछा कि तुमने किस आधार पर जीत दर्ज कराई है? तब गोपाल ने समझाते हुए कहा, ''महाराज! आपने खाली पेट सर्वाधिक रसगुल्ला खाने वाले को पुरस्कृत करने की बात कही थी, तो मैंने उस शर्त को पूरा कर दिया है।''

''वह कैसे?'' महाराज ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा। ''महाराज! पंडित जी ने खाली पेट एक रसगुल्ला खाया था जबकि दूसरे तीसरे रसगुल्लों को खाते हुए उनका पेट खाली नहीं था। तब तक पहले रसगुल्ले ने उसके पेट में जगह बना ली थी। मैंने खाली पेट दो रसगुल्ले खाये थे। अब आप ही बताइए कि जीत किसकी हुई?''

अब गोपाल के कुंडे के बाकी बचे रसगुल्लों को दरबारियों ने खाकर गोपाल की जीत का खूब उत्सव मनाया। उधर मंत्री मैदान से घर और घर से मैदान कर रहा था। उसने भोला हलवाई के विरुद्ध दरबार में नालिश (मुकदमा) करने की सोची पर वह किस आधार पर नालिश (मुकदमा) करता?

- गुड़ियाहारी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

कैप्टन जसराम सिंह

बचपन में आने वाली कठिनाइयाँ भावी जीवन की चुनौतियों के लिए साहस प्रदान करती हैं। कैप्टन जसराम सिंह जी की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। १ मार्च १९३५ को ग्राम भाकोबारा जिला बुलंदशहर (उ. प्र.) में जीवन की मूलभूत सुविधाओं का जहाँ भी अभाव हो ऐसे कृषक चौधरी बदनसिंह जी के घर उनका जन्म हुआ था। लेकिन अभावग्रस्तता में भी ध्येय निष्ठा, ईमानदारी और सादगी के संस्कारों की जड़ें गहरे जमीं।

बड़े हुए तो उच्चशिक्षा प्राप्त कर सेना में सिग्नल मैन हो गए। कई सिग्नल रेजीमेंटों में सेवाएँ देकर सेना शिक्षा कोर में इन्ट्रक्टर हो गए। अन्ततः लेफ्टीनेंट कर्नल के पद पर पहुँचकर सेवा निवृत्त हुए।

घटना १९६८ की है। १६ राजपूत रेजीमेंट में मिजो हिल्स पर वे कमांडिंग ऑफिसर बनकर तैनात थे। ३० अक्टूबर रात को ५० सशस्त्र विद्रोहियों के एक गाँव की ओर बढ़ने की सूचना मिली। सुबह ४.३० का समय था दो प्लाटून लेकर वे गाँव तक पहुँचे ही थे कि विद्रोहियों ने दनादन गोलाबारी आरंभ कर दी। सतर्क और साहसी कैप्टन ने ताबड़तोड़ जवाबी हमला कर दो दुश्मनों की लाशें बिछा दीं शेष मैदान छोड़कर भाग गए। शत्रु का ठिकाना अब हमारा था। तीन विद्रोहियों ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

अदम्य साहस सतर्कता और नेतृत्व का प्रदर्शन कर कैप्टन जसरामसिंह अशोकचक्र से सम्मानित हुए।

महाराजा शेरसिंह की होली

– कुमुद कुमार

हरित वन में होली का त्यौहार मनाने की तैयारी बड़े जोर–शोर से चल रही थी। इसका कारण यह था कि इस बार महाराजा शेरसिंह ने होली मनाने के लिए एक जोरदार घोषणा की थी।

इससे पहले तक होली के त्यौहार के विरोधी होली के विरोध में महाराजा शेरसिंह के कान भर–भरकर उस पर रोक लगवाने के लिए आदेश निकलवाते रहते थे। कभी वे होली खेलने पर इसलिए प्रतिबंध लगवा देते थे कि इसमें पानी की बहुत बर्बादी होती है। कभी वे कहते थे कि होली पर दंगे–फसाद बहुत होते हैं। कभी वे प्रमाण प्रस्तुत करते थे कि रंग लगाने से त्वचा खराब हो जाती है और इससे होली खेलने वाले बीमार पड़ जाते हैं।

असल में होली विरोधियों का असली उद्देश्य यही रहता था कि कुछ न कुछ ऐसा किया जाये जिससे कि होली का त्यौहार न मनाया जाये। यही कारण था कि हर वर्ष वे कोई न कोई नया मुद्दा लेकर आ जाते थे जिससे कि होली के त्यौहार में अड़चनें पैदा हो जायें।

लेकिन इस बार होली खेलने वाले पहले से ही होली खेलने के लिए कमर कसे हुए थे। उन्होंने महाराजा को समझाया कि होली विरोधियों का असली उद्देश्य होली के त्यौहार में बस अड़ंगे लगाना है।

महाराजा शेरसिंह को उनकी बात अच्छे से समझ में आ गयी। उन्होंने घोषणा की कि इस बार होली के त्यौहार पर कोई बंदिश नहीं। उनके राज्य में होली धूमधाम से मनायी जायेगी। जोरदार तरीके से होली खेलने वाली टोलियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिया जायेगा। जो होली के विरोध में अपने व्यर्थ के सुझाव लेकर आयेगा, उनके सुझावों को गटर में डाल दिया जायेगा और ऐसे सुझाव लाने वाले को होली तक कैदखाने में।

महाराजा शेरसिंह की यह घोषणा सुनकर हरित वनवासियों को लगा कि असली आजादी अब आयी है। वो तो अब तक हर वर्ष प्रतिबंधों में होली खेलते आये थे।

होली वाले दिन हरित वन में होली खेलने वालों की टोलियाँ ही टोलियाँ नजर आ रही थी। टोली लंगूरों की हो या वानरों की, हाथियों की हो या शेरों की, खरगोशों की हो या चूहों की, सबके सब होली की मस्ती में झूमते दिखाई दे रहे थे।

हाथी तो अपनी सूंड से ही पिचकारी का काम ले रहे थे। किसी को तब तक पता ही नहीं चलता था कि किस हाथी की सूंड रंग से भरी है जब तक कि वह हाथी उसे अपनी सूंड के रंग से तरबतर न कर देता था।

सबसे अधिक मस्ती लंगूरों और बंदरों की थी। वे एक-दूसरे को ऐसे रंग लगा रहे थे मानो उनके बीच एक-दूसरे को रंगने की अनथक प्रतियोगिता चल रही हो।

गधे बेचारे सबसे अधिक परेशान थे। उन्होंने कोई भी रंगकर चला जाता था लेकिन वे किसी को भी रंग नहीं लगा पा रहे थे। वे होली कम खेल पा रहे थे 'ढेंचू-ढेंचू' का शोर अधिक मचा रहे थे।

महाराजा शेरसिंह ने जब हरित वनवासियों को जोरदार होली खेलते देखा तो वे भी स्वयं को रोक न पाये। वे भी होली खेलने के लिए राजसी पोशाक में ही मैदान में उतर पड़े। लेकिन उनकी राजसी पोशाक देखकर किसी की भी हिम्मत उनके साथ होली खेलने की नहीं हो रही थी। वे यह बात नहीं समझ पा रहे थे कि कोई उनके साथ होली क्यों नहीं खेल रहा है।

अब महाराजा सोचने लगे कि सबके साथ मस्ती के साथ होली कैसे खेलें? उन्होंने अपने महामंत्री चतुर सियार से पूछा- ''महामंत्री, हम भी सबके साथ मस्ती के साथ होली खेलना चाहते हैं, बताओ इसके लिए हम क्या करें?''

''महाराज! इसके लिए आपको अपनी राजसी पोशाक उतारनी पड़ेगी और सबके जैसे फटे-पुराने कपड़े पहनने पड़ेंगे।''

महाराजा तुरंत राजमहल में गये। उन्होंने अपनी राजसी पोशाक उतार फेंकी और फटे-पुराने कपड़े पहनकर होली खेलने के लिए तैयार हो गये।

महाराजा को फटी-पुरानी पोशाक में देखकर, सब उन पर हँसने लगे। लेकिन डर के कारण किसी ने भी उन पर रंग नहीं फेंका।

यह देखकर महाराजा शेरसिंह महामंत्री चतुर सियार पर भड़क पड़े- ''महामंत्री! तुम्हारी योजना किसी काम की नहीं। अब तो हरित वनवासी हम पर हँस और रहे हैं।''

तभी अचानक उन पर जोरदार रंगों की बौछार शुरू हो गयी। चार हाथियों ने उन पर अपनी-अपनी सूंड से लाल, हरे, नीले और पीले रंगों की बौछार कर दी। वे रंगों से ऐसे तर-बतर हो गये कि अब कोई उनको पहचान ही नहीं पा रहा था। यह सब चतुर सियार की योजना थी।

महाराजा के पहचान में न आ पाने के कारण, सब वनवासी उनके साथ जमकर होली खेलने लगे। महाराजा शेरसिंह भी अपनी राजशाही भूलकर आम वनवासी की तरह होली खेलने का आनंद उठाने लगे। वे होली खेलने वालों की एक टोली में शामिल हो गये।

यह टोली जिस ओर से निकलती, उस पर रंगों की बरसात होती। महाराजा शेरसिंह ने होली खेलने का ऐसा आनंद कभी नहीं लिया था। वे भूल गये कि वे जंगल के राजा हैं। वे भी आम वनवासी की तरह नाचने-गाने और ढोल बजाने लगे। उनके आनंद की

आज कोई सीमा न थी।

लेकिन एक जगह सब गड़बड़ हो गया। जैसे ही होली खेलने वालों की यह टोली सियारों के मोहल्ले से निकली, सियारों ने चालाकी कर दी। उन्होंने रंगों की जगह साफ पानी की बौछार कर दी। साफ पानी की बाल्टियाँ हुरियारों पर पलट दी। इससे कई के चेहरों का रंग उतर गया। उनमें महाराजा शेरसिंह भी शामिल थे।

महाराजा शेरसिंह को अपने बीच पाकर सब सहम गये। सियार भी उनको पहचानते ही चुप हो गये। सबको डर था कि महाराजा उन्हें न जाने अब कौन-सा दण्ड देंगे।

उनके डर को दूर करने के लिए महाराजा शेरसिंह जोर-जोर से हँसने लगे। उन्हें ऐसे हँसता देखकर कई वनवासियों की हँसी छूट गयी। फिर तो सारे के सारे जानवर जोर-जोर से हँसने लगे।

फिर महाराजा शेरसिंह ने अपनी हँसी रोककर कहा- ''अरे वनवासियों! तुमने होली खेलना बंद क्यों कर दिया? होली तो समता और सद्भाव का त्यौहार है। इसमें कौन राजा और कौन रंक? इस त्यौहार का तो महत्व ही यह है कि इसमें तो शत्रु भी अपनी शत्रुता भुलाकर एक-दूसरे के गले लग जाते हैं। आओ, हम सब पहले की तरह होली खेलें।''

अपने महाराजा का यह संदेश सुनते ही, सभी वनवासियों का डर समाप्त हो गया। वे पहले से भी दुगने उत्साह से होली खेलने लगे।

उन्होंने अपने प्रिय महाराजा को अपने कंधों पर उठा लिया। हरित वन में होली का जोरदार हुड़दंग एक बार फिर से शुरू हो गया। आखिर पुरस्कार जीतने की चाह हर टोली को थी।

- बिजनौर (उ. प्र.)

कविता

रंगों के सहगान

- डॉ. हरीश निगम

छेड़ रही होली ये तान-
हर होंठों में हो मुस्कान!
जो मुखड़े हों फीके,
उनमें हँसी-खुशी के,
भर दें रंगों के सहगान!
ज्यों होली की टोली,
रहो सदा हमजोली,
भेद-भाव की बात न मान!
पिचकारी की धारें,
बनकर देश सँवारें,
मोड़ें नफरत के तूफान!

- सतना (म. प्र.)

होली कहां! इंटरनेट पर बैठे-बैठे चेहरे का रंग पीला पड गया है!

जल देवता प्रकट हो! कब तक बंदर सा मुंह बनाए बैठा रहूं?

होली के अनूठे रंग!!

हैप्पी इंटरनेट होली!

देबंशु

क्रिकेटिया होली

रंग से बचने के उपाय

झोपड़ी में आग

– रजनीकांत शुक्ल

हमारे देश का मध्यभाग मध्यप्रदेश के नाम से जाना जाता है। जो राज्यों के पुनर्गठन के आधार पर एक नवम्बर १९५६ को अस्तित्व में आया था। इसी मध्यप्रदेश राज्य से अलग होकर एक नवम्बर २००० को छत्तीसगढ़ भारत का छब्बीसवाँ राज्य बना।

इस छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर है और इसी रायपुर जिले की तहसील बलौदा के गंगई गाँव की यह बात है जहाँ एक अप्रैल २००० को आठ वर्ष की एक लड़की विद्या कुमारी अपने पड़ोस में रहने वाले कुछ बच्चों के साथ खेल रही थी। जिनमें डेढ़ वर्ष का उमेश कुमार, दो वर्ष की सविता, साढ़े तीन वर्ष की दीपिका और पाँच वर्ष की पंचबाई नाम की लड़की थी और एक पाँचवाँ बच्चा और था।

वे बच्चे उस समय जहाँ खेल रहे थे वह एक खेत था जिसमें तरबूज की खेती की गई थी। किन्तु बच्चों को तरबूज से कोई लेना–देना नहीं था। वे तो बस आपस में भाग–दौड़ का खेल खेलने में लगे हुए थे। तरबूज के उस खेत में खेत के मालिक ने तरबूजों की चोरों और जानवरों से रखवाली करने के लिए एक फूस की झोपड़ी बनाई हुई थी।

उस समय कोई बड़ा व्यक्ति खेत पर उपस्थित नहीं था। जो उन नन्हें बच्चों को हल्ला–गुल्ला शोरगुल मचाने से रोकता–टोकता। बच्चे अपना प्रिय खेल छिपना और ढूँढ़ना शुरू कर चुके थे। उसमें वह फूस की झोपड़ी उनकी मददगार हो रही थी।

अब चार बच्चे छिप जाते और एक उन्हें खोजने का प्रयत्न करता। इस प्रकार उनका खेल जारी था। घर परिवार के बड़े लोग कहीं न कहीं काम में व्यस्त थे। बच्चों को उन्होंने इसलिए भी वहाँ छोड़ा हुआ था कि कम से कम बच्चे खेलते रहेंगे और खेत की रखवाली भी होती रहेगी। वे उन बच्चों से निश्चिन्त थे। उन्हें नहीं पता था कि ऐसे में कोई ऐसी घटना घट जाएगी जिसकी गूँज देश की राजधानी दिल्ली तक जा पहुँचेगी।

चूँकि उनमें सबसे बड़ी विद्या ही थी इसलिए वह ही उनकी स्वाभाविक नेता थी। सारे बच्चे विद्या दीदी विद्या दीदी कहते हुए विद्या के आगे–पीछे घूम रहे थे। वह भी अपनी जिम्मेदारी समझती हुई अपनी सामर्थ्य भर उन्हें सहयोग कर रही थी।

छुपम–छुपाई का खेल चल ही रहा था कि पता नहीं किसी बच्चे की शरारत थी या छुपने के क्रम में उनसे भूल हो गई। झोपड़ी में पहले से पड़ी हुई आग धीरे–धीरे सुलग उठी। खेल की धुन में लगे उन बच्चों का उस ओर ध्यान नहीं गया। वे मस्त उसी प्रकार खेलते रहे।

''विद्या दीदी! तुम बहुत जल्दी आ जाती हो? हमें छुपने का समय ही नहीं मिल पाता है?'' पंचबाई

ने बाकी सभी बच्चों की ओर से शिकायत की। सभी बच्चों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई।

''तो क्या करें तुम्हीं बताओ हमें?'' विद्या दीदी ने उनसे पूछा।

''अब तुम दूसरी तरफ मुँह करके पूरी एक से लेकर सौ तक गिनती गिनो। उसके बाद आना समझी।'' पंचबाई ने सलाह देते हुए रास्ता सुझाया।

''ठीक है! इस बार ऐसा ही करेंगे।'' कहती हुई विद्या झोपड़ी से दूर हटती चली गई।

विद्या के आगे बढ़ते ही सारे बच्चे छुपने के लिए झोपड़ी के अंदर की ओर भागे। वे ऐसी जगह छिप जाना चाहते थे जहाँ उन्हें विद्या दीदी आसानी से न ढूँढ़ पाए।

''उमेश! तुम इधर आओ।'' दीपिका ने उसे पुकारा और जल्दी से उसे गोद में उठाकर झोपड़ी के एक कोने में दौड़ पड़ी।

पंचबाई भी सविता और पाँचवे बच्चे को साथ लेकर झोपड़ी के दूसरे कोने की ओर छिपने के लिए चल पड़ी।

उधर विद्या की गिनती चालू थी। इकतालीस बयालीस तैंतालीस चवालीस...

इधर बच्चे एक जगह छिपते और फिर उसे असुरक्षित समझकर झट से दूसरी ओर भाग जाते। अंत में उन्होंने अपनी समझ से अपना सुरक्षित ठिया ढूँढ लिया और उसमें छिप गए।

उधर विद्या जोर-जोर से गिनी गिने जा रही थी। इकहत्तर, बहत्तर, तिहत्तर चौ.....

''आ जाओ।'' दीपिका ने दबी-दबी आवाज में कहा ताकि उनकी आवाज से उसके छिपने की जगह का पता न चल सके।

''चुप रह। पूरे सौ तो हो जाने दे।'' पंचबाई ने दीपिका को डपटते हुए कहा।

वे सब बच्चे इस बात से अनजान थे कि झोपड़ी की अन्दर की उस सुलगती आग में चिंगारियाँ ही नहीं अब लपटें उठने लगीं हैं। उधर जैसे-जैसे विद्या की गिनती बढ़ती जा रही थी इधर आग जोर पकड़ती जा रही थी।

विद्या का मुँह उस समय विपरीत दिशा में था। उसे कोई अंदाजा नहीं था कि उसके पीठ पीछे क्या हो रहा है। दूसरी ओर छिपे होने के कारण उन बच्चों को भी इस बात का कोई आभास नहीं था कि वे उस समय किस मुसीबत में फँच चुके हैं।

छियानवे सत्तानवे अट्ठानवे निन्यानवे और सौ कहकर जैसे ही विद्या पलटी तो उसके होश उड़ गए। उसे एकदम से यह समझ में नहीं आया कि पलक झपकते ही अचानक यह क्या हो गया। झोपड़ी से ऊँची-ऊँची आग की लपटें निकल रहीं थीं।

वे छोटे बच्चे उसी झोपड़ी के अन्दर छिपे हुए थे जिन्हें अब उसे खोज निकालना था। उसने अपना होश नहीं खोया न वह सहायता के लिए गाँव की ओर भागी। उसे अब वास्तव में सचमुच का खतरों का खिलाड़ी बनकर उन बच्चों की जान को बचाना था।

वह तीर की तरह झोपड़ी की ओर भागी। साथ ही उसने जोर की आवाज भी लगाई– ''पंचबाई, दीपिका उमेश, सविता बाहर निकलो।'' किन्तु वे सारे के सारे दम साधे अन्दर छिपे हुए थे। वे सब इसे विद्या दीदी की कोई चाल समझ रहे थे।

अभी तक जिस तरफ आग जल रही थी उसका असर अन्दर नहीं पड़ा था। वह झोपड़ी का बाहरी भाग था। किन्तु फूस की झोपड़ी होने के कारण जल्दी ही आग की लपटों ने पूरी झोपड़ी को अपने लपेटे में ले लिया। जब आग की लपटें इन बच्चों तक पहुँची तब तक विद्या अन्दर इन तक पहुँच चुकी थी।

उसने जल्दी से नन्हें उमेश, सविता, दीपिका, पंचबाई को एक–एक करके तेजी के साथ झोपड़ी से बाहर निकाला। इस बीच फूस की झोपड़ी पूरी तरह आग की लपटों में घिर चुकी थी। विद्या ने अपनी जान पर खेलकर उन चारों बच्चों को झोपड़ी से बाहर निकाल लिया।

फूस की बनी वह झोपड़ी धू–धू करके जलने लगी थी। इस हड़बड़ी में एक बच्चा उसमें ही छिपा रह गया और आग में फँस गया। जिसे विद्या नहीं निकाल सकी। किन्तु बाकी के चार बच्चों को उसने अपनी जान की परवाह न करते हुए जलती हुई फूस की झोपड़ी की आग से बाहर निकाल लिया। मात्र आठ वर्ष की लड़की से ऐसे संकट में आप और क्या आशा कर सकते हैं। एक बच्चे को न बचा पाने का विद्या को बहुत दु:ख था।

विद्या कुमारी यादव को वर्ष २००० का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमंत्री जी के हाथों से प्राप्त हुआ। इस प्रकार वे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्राप्त करने वाली छत्तीसगढ़ राज्य की पहली बहादुर बालिका बनी।

नन्हे मित्रों,
संकट में फँस जाओ कभी तो, इधर उधर मत ताको।
मन को कर एकाग्र समस्या हल कैसे हो ? सोचो।।
मत सोचो कोई आएगा, मदद करे जो मेरी।
कर दो जो मन को लगता है सही, करो मत देरी।।

– नई दिल्ली

कविता : गौरैया दिवस २० मार्च

गौरैया

– सृष्टि पांडेय

देखो–देखो तो भैया,
घर में आई गौरैया।

इस छत से, उस छत जाती,
गेंहू के दाने खाती।
भरा कटोरे में पानी,
चूं–चूं करती पी जाती।
छोटी पर हिम्मती बड़ी,
आसमान में दूर उड़ी।
करतब करती फुदक–फुदक,
नाच दिखाती ता–थैया।
मन जैसे ही भर जाता,
उड़ जाती है गौरैया।
कहो तुम्हारे घर पर भी,
क्या आती है गौरैया ?

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

रंग सभी प्यारे

– कुमार गौरव अजीतेन्दु, पटना (बिहार)

होली को लेकर जंगल में
हुई सभा चिड़ियों की एक।
विषय अचानक छिड़ा वहाँ कि
रंग कौन–सा सबसे नेक ?
कौवे का कहना था
''काला ही सबसे अलबेला रंग।''
बात काट तोते ने बोला
''हरे बिना दुनिया बेढंग।।''
मैना कैसे पीछे रहती!
लिया तुरंत भूरे का पक्ष।
हंस कहे, रंगों में कोई
नहीं सफेदी के समकक्ष।।
सबकी बातें सुनकर मोर हँसा
फिर बोला– ''लड़ो न मीत।''
''रंग सभी प्यारे होते हैं,
मिलकर रहना जग की रीत।।''

आपकी पाती

बा. सा. श्यामसुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'– (लहार) विविध रसभरी कविताओं, प्रेरक एवं मनोरंजक कहानियों और अन्य बालोपयोगी सामग्री से युक्त आकर्षक चित्रों से सजी सँवरी प्यारी पत्रिका का नवीन मनभावन अंक। समस्त संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं समस्त सम्मिलित रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

बा. सा. कुसुम अग्रवाल– (कांकरोली) देवपुत्र के जनवरी २०२३ के अंक में प्रकाशित हुई है कहानी 'सुंदरिए–मुंदरिए हो' पंजाब में बीते बचपन के अनुभवों के आधार पर एक वर्ष पूर्व लिखी हुई यह कहानी कुछ विलंब से भेजने के कारण २०२२ में प्रकाशित न हो सकी थी परन्तु मैं आभारी हूँ देवपुत्र संपादक मंडल की कि उन्होंने इसे स्वीकृत कर एक वर्ष तक संभाल कर रखा और अभी इसे प्रकाशित किया।

बा. सा. राजेन्द्र श्रीवास्तव– (विदिशा) पत्रिका देवपुत्र का यह अंक डाक से मिला। चित्ताकर्षक बहुरंगी मुखपृष्ठ बालकों और बालिकाओं को प्रसन्नता देगा।

सारगर्भित संपादकीय भी बाल जगत को तिरंगे के महत्व और समाहित संदेश हृदयंगम करने के लिए सुलझा हुआ दृष्टिकोण देगा। अपनी गरिमा अनुरूप बहुत–बहुत बधाई।

बा. सा. मीरा जैन– (उज्जैन) हमेशा की भाँति बाल ही नहीं बड़ों के विचारों में भी खूबसूरत रंग भरती देवपुत्र के नववर्ष का नवीन अंक वास्तव में बहुत मन भावक एवं उपयोगी है, मेरी लघुकथा को स्थान देने हेतु संपादक जी का हृदय से आभार। देवपुत्र की सफलता का परचम यूँ ही लहराता रहे मंगलकामनाएँ।

खेलों का मेला और उपचार की बातें

– डॉ. मनोहर भण्डारी

मोहनगढ़ के आस–पास कई गाँव हैं। ये सभी गाँव मोहनगढ़ जैसे छोटे–छोटे ही हैं। इन गाँवों के बच्चों और जवानों को खेलने में खूब आनंद आता है। कबड्डी, खो–खो तथा कुश्ती लड़ना उनको मजेदार लगता है।

वर्ष में एक बार सब गाँवों के चुने हुए खिलाड़ी एक गाँव में जमा होते हैं। उनके बीच हार–जीत का निर्णय होता है। इस बार खेल मोहनगढ़ में हो रहे हैं।

मकर संक्रांति के चार दिन बाद खेल शुरू होते हैं। बसंतपंचमी के दिन जीतने वाले गाँव और खिलाड़ियों को तहसीलदार साहब पुरस्कार बाँटते हैं।

मोहनगढ़ के लोगों ने गंगाधर जी और गोरधन अहीर की देख–रेख में एक खेल समिति बनाई। गोरधन अहीर ने कबड्डी के खेल में कई बार गाँव को पुरस्कार दिलाए थे।

इस समिति में तीस लोग थे। ये लोग आस–पास के सभी गाँवों के युवा लड़के थे। खेलों के लिए मैदान बनाए जा रहे थे। कुश्ती के लिए अखाड़े तैयार किये जा रहे थे। तैयारियाँ जोर–शोर से चल रही थी।

मकर संक्रांति के दूसरे दिन सभी जमा हुए। मोहन और रामू को भी बुलाया गया।

गंगाधर जी ने कहा– ''हमारे यहाँ खेल और कुश्ती होने वाली है। खेलों में छोटी–मोटी चोटें लगना आम बात है। कभी कभार अधिक चोट भी लग जाती है। हड्डी भी टूट जाती है।''

गंगाधर जी ने आगे बताया– ''हमारे गाँव में दो छोटे डॉक्टर हैं। ये दोनों आप सबको चोट के उपचार की कुछ बातें बतायेंगे। इससे खिलाड़ियों को भी लाभ होगा और आपको भी।'' सभी लोग प्रसन्न हुए। उन सभी ने रामू और मोहन के बारे में सुन रखा था।

मोहन ने कहा– ''किशनगढ़ के डॉ. जोशी साहेब बहुत भले आदमी हैं। डॉ. जोशी ने हमें डॉक्टरी के कुछ गुर सिखाए हैं। उनके ही कारण गाँव के डॉक्टर कहलाने लगे हैं।''

इतने में रामू बोला– ''डॉक्टर साहेब यही चाहते हैं कि ये गुर अधिक से अधिक लोग सीखें। दूसरों का भला करना सबसे बड़ा धरम है। आज हम छोटी–बड़ी चोट और हड्डी टूटने पर क्या करना

चाहिये यह बतायेंगे।''

किसी को छोटी–मोटी चोट लग जाए

मोहन ने बताना प्रारंभ किया– ''किसी को छोटी चोट लगने पर पहले पानी और साबुन से अपने हाथ धो लें।

फिर घाव को साबुन और उबाल कर ठंडे किये गए पानी से पूरी तरह साफ करें। धूल को ठीक से साफ करें। घाव में थोड़ी–सी भी धूल न रहने दें। धूल रहने से मवाद बनता है, और छूत तथा टेटनेस का खतरा रहता है।''

गोपाल ने पूछा–''घाव साफ करने के बाद क्या करें?''

मोहन ने कहा– ''यदि कोई मरहम या बोरिक पावडर हो तो लगा दें। फिर सफेद धुले हुए कपड़े की पट्टी बांध दें।''

गोपाल ने कहा– ''साफ धुले हुए सफेद कपड़े का छोटा टुकड़ा काट लें। उसकी तह (घड़ी) करके घाव से थोड़ी बड़ी पट्टी बना लें। उसे घाव पर रख दें। ऊपर से कपड़े की पट्टी लपेट दें।''

गोपाल ने अचरज से पूछा– ''मरहम नहीं लगायेंगे तो घाव कैसे ठीक होगा?''

मोहन ने बताया– ''छोटे और साफ–सुथरे घाव अपने आप ठीक हो जाते हैं।''

गोपाल ने कहा– ''फिर पट्टी बांधने की भी क्या आवश्यकता है?''

मोहन बोला– ''पट्टी बांधने से मक्खियाँ नहीं बैठती। घाव में धूल नहीं जाती है।''

गोपाल ने पूछा– ''घाव साफ–सुथरा रहे तब क्या पट्टी बांधना आवश्यक नहीं होता?''

मोहन ने पूछा– ''और क्या करना चाहिये?''

गोपाल ने कहा– ''पीड़ा अधिक हो तो पीड़ा कम करने वाली गोलियाँ देना चाहिये। टेटनेस का टीका लगवाना आवश्यक होता है।''

– इन्दौर (म. प्र.)

दोहे

बारह मासी दोहे

– डॉ. दशरथ मसानिया

प्रथम महिना चैत्र का, गुड़ी पड़वा को मान।
नव संवत्सर भी लगा, राम जनम भगवान।१।
फसलें आ बैसाख में, आखातीज बहार।
नाच गान है भांगड़ा, ब्याहों की भरमार।२।
जेठ महिना ग्रीष्म का, लू से भरते आह।
पशु–पक्षी सब ढूँढ़ते, पानी ठंडी छाह।३।
आय असाढ़ा झूमके, पानी बादल साथ।
खेती भी सब बो रहे, खाद बीज है हाथ।४।
सावन में हरियाली है, रिमझिम बरसे फ्वांर।
सखियाँ झूला झूलतीं, राखी भैया प्यार।५।
भादों आठम रात को, जन्में कृष्ण मुरार।
मघा पूर्वा साथ में, बरसें मूसल धार।६।
सोलह श्राद्ध क्वांर में, नवरात्रि भी आन।
विजया दशमी पूजिये, पूनम रास महान।७।
कार्तिक में आनंद है, दीवाली त्यौहार।
ग्यारस देव उठाइये, फिर नानक अवतार।८।
अगहन मास ठंडी पड़े, ऊनी कपड़े भाय।
राम जानकी ब्याह है, दिन छोटे हो जाय।९।
मकर संक्रांति पौष में, फसलें करती गान।
दिन भी तिलतिल बढ़त है, भानु मकर में जान।१०।
माघ नहाओ नर्मदा, गुरु रैदासा आन।
बसंत पांचम को सदा, कर शारद सम्मान।११।
फागुन में शिवरात्रि है, अरु होली त्यौहार।
राधा खेलें श्याम संग, मन में प्रीति अपार।१२।

– आगर मालवा (म. प्र.)

जल से संकट

– तारादत्त जोशी

सुबह नाश्ते के बाद दादा जी ने पूछा– ''बच्चो! इतने दिन घूमने के बाद आपको कौन–सा स्थान सबसे अच्छा लगा?''

कंचन बोली– ''दादा जी! वैसे तो सभी स्थान बहुत अच्छे थे किन्तु मुझे तो जयगढ़ का किला और जल महल बहुत अच्छे लगे। जल महल में तरह–तरह के पंछियों को देखना अद्भुत था।''

''मुझे तो जंतर–मंदर, हवा महल, संग्रहालय ने अधिक आकर्षित किया। किन्तु यह दर्शनीय स्थल सबसे अच्छा था, कहना तो अत्यधिक कठिन कार्य है।'' सिद्धार्थ ने अपनी बात रखी।

दादा जी बोले– ''बेटा! वैसे तो पूरा ही राजस्थान दर्शनीय है और यहाँ के कण–कण से वीरता, त्याग और बलिदान की सुगंध आती है। फिर जयपुर का तो कहना ही क्या? इसका तो नाम ही गुलाबी शहर है। यहाँ की तो हर चीज दुनिया को आकर्षित करती है। अच्छा! अब मेरी तो छुट्टियाँ समाप्त हो गई हैं। मैं अब अपने काम से ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण पर जाऊँगा और आप लोग दादी के साथ कहानियों का आनन्द लेकर छुट्टियाँ मनाइए और अपना विद्यालय का काम भी करते रहना। बाद में आपको कुछ खास–खास जगहें और घुमाने ले जाएंगे।''

''दादा जी! मुझे भी ले चलो न अपने साथ गाँव में।'' सिद्धार्थ ने आग्रह किया।

''बेटा! मैं वहाँ पर दिनभर अपनी टीम के साथ रहूँगा और आप बोर हो जाएँगें और हो सकता है रात गाँव में ही बितानी पड़े।''

कंचन बोली– ''नहीं दादा जी! ऐसा कुछ नहीं होगा। कृपया.... ले चलिए न। मैं भी चलूँगी आप के साथ।''

''अच्छा! तो ठीक है, फिर चले चलना।''

दूसरे दिन कंचन और सिद्धार्थ दादा जी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण पर निकल गए। जीप गाड़ी के गाँव में पहुँचने के बाद दादा जी और उनकी टीम के लोग अपने काम में लग गए। कंचन और सिद्धार्थ गाँव के बच्चों के साथ खेलने लग गए। एक लड़की घर से दाल–बाटी–चूरमा लायी थी। उसने सबको दाल–बाटी दी। सिद्धार्थ ने शहर से लाई हुई मिठाइयाँ, नमकीन और बिस्किट बाँटे। बच्चे चाव से मिल–बाँटकर खाने लगे।

अचानक खाते समय कंचन का ध्यान बच्चों के दाँतों में गया। सबके दाँत काले–पीले धब्बेदार और मसूड़े गले हुए थे। तभी कुछ बच्चे और आये जिनकी हड्डियाँ आड़ी–टेढ़ीं थीं। सिद्धार्थ भी उन

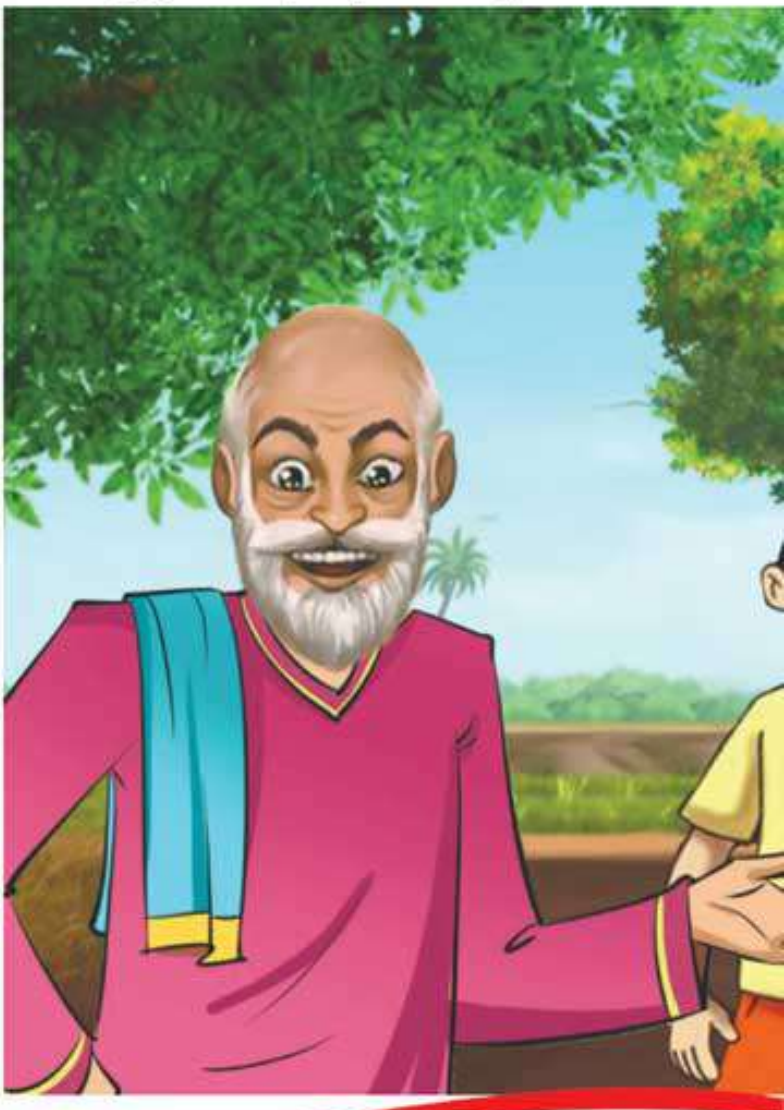

बच्चों को देखकर सकुचा गया। कोई कुछ बोलता, उससे पहले ही दादा जी ने आवाज दी। सभी बच्चे साथ-साथ आ गये।

जिस घर में दादा जी बैठे थे वहाँ भी आस-पड़ोस के बहुत लोग जमा थे। सिद्धार्थ ने देखा यहाँ पर आए लोगों के दाँत भी धब्बेदार और कुछ लोगों की कमर झुकी हुई और हड्डियाँ टेढ़ीं थीं। बच्चे-बूढ़े और जवान सभी के चेहरे पर बेबसी, लाचारी और निराशा साफ दिखाई दे रही थी। कंचन और सिद्धार्थ प्रश्नवाचक मुद्रा में सबको देख रहे थे। लेकिन उनकी समझ में कुछ नहीं आया।

रात को घर आने के बाद कंचन ने से पूछा, ''दादा जी! उन गावों में लोगों के दाँत उतने गंदे क्यों थे और वहाँ बहुत सारे लोगों की हड्डियाँ भी आड़ी-टेढ़ीं थीं?''

''बेटा! यह सब दूषित पानी के कारण है। इन गाँवों के लोग 'फ्लोरोसिस' नाम की बीमारी से ग्रसित हैं। फ्लोरोसिस के कारण ही इन लोगों के दाँत और हड्डियों में विकृति है।''

कंचन ने पूछा- ''दादा जी! फ्लोरोसिस बीमारी कैसी होती है?''

''भाई! आप लोग तो जानते ही हैं भोजन और जल से हमारे शरीर को विविध प्रकार के खनिज लवण मिलते हैं। इन्हीं में से एक फ्लोराइड भी है। जब शरीर में 'फ्लोराइड' नामक तत्व अधिक मात्रा में जमा हो जाता है तब यह बीमारी होती है। फ्लोराइड भोजन और जल द्वारा हमारे शरीर में जाता है। यहाँ के लोग 'फ्लोरोसिस' से ग्रसित हैं।''

''लेकिन फ्लोराइड पानी में कैसे आ जाता है, दादा जी!'' सिद्धार्थ ने पूछा।

''बेटा! 'फ्लोराइड' भी अन्य खनिजों की भाँति धरती में पाया जाता है और रिस कर भूमिगत जल में मिल जाता है। जब हम लगातार 'फ्लोराइड' युक्त पानी पीते हैं तो हमारे शरीर में फ्लोराइड की मात्रा बढ़ जाती है और यह हमारी हड्डियों के जोड़ों में जमा हो जाता है और विकलांगता पैदा करता है। जिससे हड्डियाँ आड़ी-टेढ़ी हो जाती हैं। इसे 'हड्डी' का (अस्थि) फ्लोरोसिस कहते हैं। साथ ही फ्लोराइड दाँतों से वल्क को हटा देता है। जिससे दाँतों में काले-पीले धब्बे पड़ने लगते हैं और मसूड़े गलने लगते हैं। यह दाँतों का (दंत) फ्लोरोसिस कहलाता है। यहाँ तो लोग दोनों ही प्रकार के फ्लोरोसिस से ग्रसित हैं।''

''ओह दादा जी! फ्लोरोइड तो बहुत हानिकारक है।''

''नहीं-नहीं, फ्लोराइड हमेशा हानिकारक नहीं होता है। इसकी निश्चित मात्रा तो शरीर के लिए आवश्यक और लाभकारी है। कई बार फ्लोराइड की कमी से भी शरीर में रोग हो जाते हैं।''

''फ्लोरोसिस से बचने का उपाय भी तो होगा, दादा जी? इन लोगों का जीवन तो बहुत कष्टकारी है।'' कंचन ने जिज्ञासा प्रकट की।

''फ्लोरोसिस से बचने का तो एक ही उपाय है कि फ्लोरोइड युक्त जल का प्रयोग न किया जाय। साथ ही विटामीन सी पर्याप्त मात्रा में लिया जाय।'' विटामिन सी से इस रोग से लड़ने में सहायता मिलती है। लेकिन इन क्षेत्रों में एक तो पीने योग्य पानी की वैसे ही कमी है। साथ ही जिन क्षेत्रों में पानी है भी तो वह अत्यधिक फ्लोरोराइड युक्त है।''

''लेकिन इन लोगों के लिए साफ पानी की व्यवस्था कैसे हो सकती है?'' कंचन और सिद्धार्थ दोनों ने पूछा।

''बेटा! एक तो सरकार प्रयास कर रही है। जिसके अंतर्गत हम प्रत्येक घर से पानी का नमूना लेकर जाँच कर रहे हैं और प्रयास कर रहे हैं कि हर घर तक स्वच्छ पेय जल उपलब्ध हो सके। लेकिन इसका असली समाधान तो तब होगा जब हम जल का समुचित प्रबन्ध करेंगे और जल की बचत करेंगे।''

''समुचित जल प्रबंध से आपका मतलब क्या है? दादा जी।'' कंचन ने पूछा।

''भाई! एक तो हमें कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक, आदि से अपने जल स्रोतों, नदियों, तालाबों, झीलों को बचाना होगा, ताकि जल दूषित न हो। दूसरा हमें जल को बरबाद होने से बचाना होगा। अपनी साइकिल, स्कूटर, कार आदि को धोने में पेय जल के प्रयोग से बचना होगा और वर्षा जल को संचित करना होगा। इस प्रकार जो जल की बचत होगी वह इन लोगों के काम आएगा और समस्या का समाधान भी होगा।''

कंचन और सिद्धार्थ दोनों एक साथ बोले- ''दादा जी! हम आज से बिल्कुल भी पानी बरबाद नहीं करेंगे और अपने विद्यालय में अपने साथियों को भी बताएँगे कि किस तरह हमारे देश के दूसरे भाग में लोग दूषित पानी के कारण कितने परेशान हैं और हमें पानी बरबाद नहीं करना चाहिए।''

''शाबास बेटा! अगर हममें से हर व्यक्ति अपने साथ वाले को भी जागरूक करें तो 'एक-एक मिल ग्यारह होते' वाली कहावत चरितार्थ हो जाएंगी और बहुत बड़ी मात्रा में पानी बच जाएगा।''

- बाजपुर (उत्तराखंड)

श्रद्धांजलि

सरोजिनी कुलश्रेष्ठ दिवंगत

८ जनवरी २०२३ को बाल साहित्य की पुरोधा और अनेक पुरस्कारों से सम्मानित आदरणीया दीदी डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का स्वर्गवास हो गया।

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का नाम हिन्दी साहित्य जगत में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की लगभग हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है, चाहे वह बालसाहित्य हो या कविता हो, गीत या कहानी या फिर पर्यावरण संबंधी आलेख या शोध प्रबंध या फिर उपन्यास। लगभग दो दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचनाकार डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की अनेक रचनाओं का आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण हुआ है। वह अनेक वर्ष तक आकाशवाणी मथुरा की सलाहकार रहीं थीं। देवपुत्र पर उनका अपार स्नेह रहा। प्रथम देवपुत्र गौरव सम्मान भी उन्हें ही प्रदान किया गया था।

आदरणीया दीदी को देवपुत्र परिवार का शत शत नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि।

सयाना कौन?

चित्रकथा-

एक भिखारी को दोपहर तक भीख में कुछ नहीं मिला...

उसने भगवान से प्रार्थना की-

हे भगवान, अब यदि मुझे दस रुपया मिलता है तो पांच रुपया तेरा पांच मेरा..

थोड़ा आगे चलकर भिखारी को पांच रुपया का सिक्का मिला.

उसने भगवान से कहा-

वाह भगवान! तू भी कितना सयाना निकला, अपना पांच रुपया तूने पहले ही काट लिया.

उतंक की गुरु दक्षिणा

– मोहनलाल जोशी

धौम्य ऋषि के एक शिष्य वेद थे। बड़े होकर वेद ने शिक्षा देना शुरू कर दिया। वे शिष्यों को भारी काम नहीं देते थे। उतंक वेद ऋषि का होनहार शिष्य था।

एक दिन वेद ऋषि की पत्नि ने उतंक से कहा– ''मुझे महारानी के कुण्डल चाहिये। तुम वे कुण्डल लाकर गुरु दक्षिणा दो।'' उतंक अनेक जंगलों का मार्ग पार कर राजधानी पहुँचा। वहाँ जाकर राजा को कहा–''मुझे गुरुदक्षिणा के लिए महारानी के कुण्डल चाहिये।'' राजा ने उसे महल में भेज दिया। उतंक महारानी से कुण्डल लेकर आ गया।

रास्ते में तक्षक नाग ने कुण्डल चुरा लिये। उतंक ने नागलोक तक उसका पीछा किया। इन्द्र ने उतंक को अपना सफेद घोड़ा दिया। उतंक उस पर सवार हो आश्रम आ गया। गुरु दक्षिणा में गुरु को कुण्डल भेंट कर दिये।

शुद्ध आचमन

उतंक वेदऋषि का शिष्य था। एक बार वह राजा के पास गया। उसे महारानी के कुण्डल लाने थे। रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उसने उतंक को

खाने के लिये कुछ दिया। उतंक ने खाकर जल्दी से हाथ धोये। आचमन लिया। फिर राजधानी आ गया।

वहाँ पर उसे राजा महल के बाहर मिल गये। राजा ने कहा– ''महल में जाकर महारानी से मिल लो।''

उतंक महल में गया। उसे रानी दिखाई नहीं दीं। वह राजा के पास आकर बोला– ''रानी अंदर नहीं हैं।'' राजा ने कहा– ''तुमने कुछ खाया। फिर हाथ ठीक प्रकार से नहीं धोये।''

उतंक ने आसन लगाया बैठकर ठीक से हाथ–पैर धोये आचमन लिया शुद्ध होकर वह फिर महल में गया उसे रानी दिखाई दी। उतंक को रानी के कुंडल मिल गए।

अशुद्ध भोजन

वेद ऋषि का शिष्य उतंक था। एक बार वह राजा के पास गया। राजा ने कहा– ''तुम श्रेष्ठ ब्राह्मण हो। आज मेरे पितरों का दिन है। तुम भोजन कर लो। उतंक ने कहा– ''मुझे शीघ्र ही आश्रम जाना है। शीघ्र भोजन कराओ।''

राजा ने भोजन की थाली मंगवायी। उतंक ने कहा– ''यह भोजन अशुद्ध है। मैं नहीं खाऊँगा।'' राजा ने उतंक को शाप दे दिया। उतंक ने भी राजा को शाप दिया। उतंक ने कहा– ''भोजन की जाँच करवाओ।''

राजा ने पता लगाया। भोजन बनाने वाली महिला के केश खुले थे। भोजन ठंडा भी हो गया था। राजा ने पुन: भोजन बनवाया। उतंक ने भोजन ग्रहण किया। उतंक ने कहा– ''भोजन अशुद्ध था। आपका शाप मुझे नहीं लगेगा।'' वह प्रसाद लेकर चल दिया। शीघ्र ही वह अपने आश्रम आ गया।

–बाड़मेर (राजस्थान)

कच्चे चिट्ठे

– तारादत्त 'निर्विरोध'

कोयल को चुप देख गधे ने,
शुरू किया जब गाना।

तभी अचानक एक ऊँट का,
हुआ कहीं से आना।।

कहा ऊँट ने गला फाड़कर,
ओ उल्लू के पट्ठे।

जान बूझकर खोल रहा क्यों,
अपने कच्चे चिट्ठे।।

–

छः अँगुल मुस्कान

ऑपरेशन के समय मरीज के पेट में स्पंज छूट गया। कई दिन बाद डॉक्टर को याद आया तो तुरंत मरीज को फोन किया– ''तुम्हें पेट में दर्द होता है?''

मरीज दर्द तो नहीं हुआ पर हाँ जब से ऑपरेशन हुआ है उसके बाद से कई–कई लीटर पानी पी जाता हूँ पर प्यास ही नहीं बुझती।

*****

एक ग्रामीण बार–बार एक ही पिक्चर के लिए टिकिट लेता रहता है।

काउन्टर पर बैठे आदमी ने पूछा– ''भाई साहब! आप एक ही फिल्म की इतनी टिकटें क्यों खरीद रहे हो, क्या फिल्म आपको बहुत पसंद आई?''

ग्रामीण ने उत्तर दिया– ''अरे नहीं भाई! फिल्म तो अभी तक मैंने देखी ही नहीं। न जाने गेट पर आप लोगों ने किस गंवार को बैठा दिया है जो बार–बार मेरी टिकटें फाड़ देता है।

*****

एक सेठ ने नौकर से पूछा– ''कल बाग में पानी क्यों नहीं दिया था?''

नौकर ने उत्तर दिया– ''क्योंकि कल पानी बरस रहा था।''

सेठ जी भौहें टेढ़ी करके बोले– ''तो छाता लगाकर नहीं दे सकता था!''

*****

ग्राहक– क्या तुम कोयला ब्लेक करते हो?

दुकानदार– नहीं श्रीमान्! कोयला तो कुदरती ब्लेक होता है।

*****

पिता– बेटे! तुम शाला से रोते हुए क्यों लौटे?

बेटा– गृहकार्य करते हुए त्रुटियाँ आप करते हैं और पिटता मैं हूँ।

भारतीय हिन्दू नववर्ष

– रामगोपाल राही

देश में हिन्दू नववर्ष बहुत ही हर्ष के साथ मनाया जाता है। भारतीय नव वर्ष का आरंभ चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा गुड़ी पड़वा को होता है। इस वर्ष यह तिथि २२ मार्च २०२३ को है। सनातन धर्म में नव वर्ष का पहला दिन सबसे शुभ दिन माना जाता है। वैदिक परंपरा के अनुसार सनातन काल गणना में चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर भारतीय नववर्ष का आरंभ होता है। साथ ही आरंभ हो चुकी बसंत ऋतु का आनंददायक वैभव, प्रकृति की अनुपमता बहुत उत्तम होती है सुहावनी होती है, मनभावन होती है।

भारतीय नव वर्ष चैत्र मास शुक्ल पक्ष की, प्रतिपदा पर मनाए जाने की अपनी ऐतिहासिकता है। यह त्यौहार पौराणिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है इस दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। परम्परा अनुसार ब्रह्माजी द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रमुख देवी देवताओं, यक्ष राक्षस गंधर्व ऋषि–मुनियों नदियों पर्वतों पशु–पक्षियों और कीट पतंगों का ही नहीं अपितु रोगों और उपचारों तक का पूजन इस अवसर पर किया जाता था। भारतीय नववर्ष की आरंभ की तिथि को नव संवत्सर भी कहते हैं।

मान्यता है शास्त्रों के अनुसार सभी चारों युगों में सबसे पहले सतयुग का प्रारम्भ इसी तिथि यानी चैत्र प्रतिपदा से हुआ था। यह उत्तम तिथि सृष्टि के कालचक्र आरम्भ का पहला दिन में मानी जाती है।

चैत्र मास की प्रतिपदा तिथि पर ही महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन मास वर्ष की गणना करते हुए, हिन्दू पंचांग की रचना की थी। इस तिथि से नए पंचांग आरंभ होते हैं, जिनमें वर्ष भर के पर्व, उत्सव, अनुष्ठानों के शुभ मुहूर्त निश्चित होते हैं।

इसी दिन भगवान श्री राम का राज्याभिषेक हुआ था। यह भी नहीं भूलना चाहिए शक्ति और भक्ति के नौ दिन नवरात्रि का यह पहला दिन होता है।

भारतीय नववर्ष के इस दिन के साथ यह भी मान्यता है कि चैत्र, शुक्ल प्रतिपदा तिथि पर भगवान राम ने वानर राज बाली का वध किया था।

ऐतिहासिक महत्व के क्रम में सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन साम्राज्य स्थापित किया था। इसी नाम पर विक्रमी संवत् का पहला दिन आरम्भ होता है।

ऐतिहासिक तथ्य बताता है कि राजा विक्रमादित्य की भाँति ही शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठ राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना था।

समझा जाता है पांडवों में सबसे बड़े भ्राता युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

माना जाता है सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज संरक्षक वरुणावतार भगवान झूलेलाल भी इसी दिन प्रकट हुए थे।

संघ संस्थापक परमपूज्य डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन भी यही समझा जाता है। महर्षि गौतम की जयंती का भी यही दिन है।

हिन्दू भारतीय नववर्ष भारतीय नववर्ष महत्व पूर्ण प्राकृतिक वैभव के साथ आरंभ होता है। भारतीय नववर्ष के आनंद का वातावरण प्राकृतिक वैभव देखते ही बनता है। यह ऋतु हँसी–खुशी उल्लास उमंगों–तरंगों के खूबसूरत नजारों से भरी हुई होती है। बसंत ऋतु का अपना विशेष महत्व होता है फूलों की सुगंध से इस ऋतु का सौंदर्य निखरा–निखरा होता है।

सनातन धर्म की कालगणना के अनुसार चैत्र

महीना बहुत ही खास होता है। यह हिन्दू नव वर्ष का पहला महीना होता है। कहा जाता है महर्षि दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना भी चैत्र माह की प्रतिपदा तिथि पर ही हुई थी।

भारतीय नववर्ष सभी के लिए हर्ष उल्लास का दिन है। हमारे देश में अलग-अलग राज्यों में नववर्ष की तिथियाँ अपने-अपने मत के अनुसार भिन्न-भिन्न भी पाई जाती हैं।

हिन्दू भारतीय नववर्ष तो सबका होता है।

महाराष्ट्र में नव भारतीय नववर्ष को गुड़ी पड़वा के रूप में जाना जाता है, जो मार्च, अप्रैल में आता है। गोवा में इस दिन हिन्दू लोग कोकणी के नाम से मनाते हैं, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना राज्य में इस दिन को उगादि के नाम से मनाते हैं।

कश्मीर में कश्मीरी पंडित इस दिन को नवरहे के रूप में मनाते हैं। बंगाल में इस दिन इस अवसर को नबा बरसा के रूप में, असम में बिहू के रूप में केरल में विशु के रूप में तमिलनाडू में पुतु हांडु के रूप में भारतीय नववर्ष मनाया जाता है।

हिन्दू भारतीय नववर्ष सभी के गौरव और हर्ष तथा उल्लास का दिवस है।

भारतीय नववर्ष मनाने के कई प्रकार रहे हैं उनमें शुभकामना संदेश भेजना परस्पर एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ देना, भगवा पताका घर द्वार पर फहराने की प्राचीन परम्परा रही है। घर के द्वार पर आम के पत्तों की बंदनवार सजायी जाती है तथा धार्मिक स्थल को फूलों से तथा रंगोली बनाकर के सजाते हैं।

भारतीय नववर्ष के प्रारंभ होने पर आज के नवाचारों में परोपकार की भावना के साथ रक्तदान शिविर लगाए जाते हैं। भारतीय नववर्ष के इस मांगलिक अवसर पर गौशालाओं में चारा डाला जाता है। हिन्दू भारतीय नववर्ष मनाने के और भी तौर तरीके हो सकते हैं जो हर्ष उल्लास उमंगों को व्यक्त करें।

- लाखेरी (उ. प्र.)

विक्रम संवत् २०८० के लिए
देवपुत्र की हार्दिक शुभकामनाएँ

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

कुश का संकल्प

– डॉ. सेवा नन्दवाल

किसी ने कुश को नींद से झकझोरा तो वह सकपका कर आँखें खोलकर देखने लगा। सामने वाले ने परिचय दिया– ''मैं नया वर्ष हूँ।'' कुश सामान्य होते बोला– ''मुझे पता है।'' ''आज मैं तुमसे एक चीज चाहता हूँ।'' नववर्ष ने कहा। ''मुझे मालूम है आप एक संकल्प चाहते हैं जो मैंने पहले ही ले लिया है, बस अब तो खुश।'' कहते हुए कुश हँस पड़ा। नववर्ष चकित रह गया– ''अरे वाह! कौन सा जरा बताओ तो?'' ''मैं एक समाज सुधारक बनूँगा।'' कुश ने उत्साहपूर्वक बताया।

''आश्चर्य की बात है, खैर तुम समाज सुधारक बनो या और कोई महापुरुष लेकिन इसके लिए बहुत तैयारी की आवश्यकता पड़ती है।'' नववर्ष ने बताया।

''मालूम है। मैं अच्छा विद्यार्थी हूँ, पढ़ने-लिखने में कुशाग्र। कभी फेल नहीं होता हमेशा साठ प्रतिशत से ऊपर अंक लेकर आता हूँ।'' कुश ने गर्वपूर्वक बताया।

''और?'' नववर्ष जैसे संतुष्ट नहीं हुआ। ''मैं अच्छी पत्रिकाएँ पढ़ता हूँ जैसे बाल भारती, समझ झरोखा, देवपुत्र, हँसती दुनिया, बालहंस, छोटू-मोटू.... इसलिए अच्छी बातें सीखता हूँ।'' कुश ने आगे बताया। ''यह आवश्यक नहीं है कि जो महापुरुष बने वह बचपन से हर क्षेत्र में प्रथम हो।'' नववर्ष बोला।

''मैं महापुरुष बनने की होड़ में नहीं हूँ, बस अच्छा बालक बनना चाहता हूँ।'' कुश ने अपनी इच्छा बताई। ''इसके लिए काफी धैर्य की आवश्यकता पड़ती है।'' नववर्ष ने सीख देना चाही।

''मुझमें है, कई बार एक दिन का उपवास किया है। क्रोध को काबू में रख सकता हूँ।'' कुश ने प्रसन्नतापूर्वक बताया।

''उसके लिए एक ध्येय की आवश्यकता होती है। कोई बड़ा ध्येय है तुम्हारे पास?'' नववर्ष ने पूछा। ''हाँ है ना, मैं भी भ्रष्टाचार को दूर करना चाहता हूँ लेकिन कैसे करूँ समझ नहीं आ रहा। आप थोड़ा मार्गदर्शन कीजिए ना।'' कुश ने कहा।

नववर्ष मुस्करा दिया। उसे पता था उसी पर यह जिम्मेदारी आ जाएगी। मुस्कराते हुए उसने बताया– ''अभी तुम छोटे हो इसलिए लघु स्तर पर

इसकी शुरूआत करो। तुम्हें पता है भ्रष्टाचार की शुरूआत घर से होती है और एक बात बताऊँ, भ्रष्ट्राचार का तात्पर्य केवल रिश्वत का लेन-देन नहीं, भ्रष्ट आचरण भी उसी श्रेणी में आता है।'' नववर्ष ने समझाया।

''आप क्या कहना चाहते हैं?'' कुश ने पूछा। ''यह बताओ तुम्हारा आचरण सबके साथ अच्छा है?'' नववर्ष ने जानना चाहा। ''हाँ!'' तत्परता से कुश बोला।

''अपने मित्रों, सहपाठियों के साथ?'' नववर्ष ने आगे पूछा। ''हाँ मैं कभी उनकी चुगली नहीं करता बल्कि उनको सहयोग देता हूँ।'' कुश ने बताया। ''और भाई-बहनों के साथ?'' नववर्ष ने पूछा। ''मैं उनके साथ कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं करता।'' कुश ने त्वरित कहा।

''घर के बुजुर्गों के साथ?'' नववर्ष ने पूर्ण आश्वस्त होना चाहा। ''ए वन, दादा-दादी मुझसे बहुत स्नेह करते हैं। मैं उनकी सेवा करता हूँ, पानी पिलाता हूँ। दवाई देता हूँ, घुमाने-फिराने ले जाता हूँ।'' कुश ने उत्साहपूर्वक बताया।

''पशु-पक्षियों के साथ कैसा बर्ताव है तुम्हारा?'' नववर्ष ने पूछा। ''उनके साथ क्या अच्छा आचरण करना? पशुओं के साथ पशुवत व्यवहार करता हूँ।'' कुश ने लापरवाही पूर्वक कहा।

''यह तुम्हारा भ्रम है, वे बेचारे मूक हैं तो क्या उनके साथ चाहे जैसा व्यवहार करोगे? तुम्हारे घर चिड़िया-तोते आते हैं तो उन्हें दाना-पानी देते हो?'' नववर्ष ने पूछा। निरुत्तर हो कुश ने सिर झुका दिया।

''अभी तुममें कमी है। इस बार पशुओं के साथ अपना व्यवहार सुधारने का संकल्प लो फिर भ्रष्टाचार उन्मूलन की और समाज सुधारक बनने की बात करना।'' कहते हुए नववर्ष अदृश्य हो गया। ''अरे सुनो, सुनो तो....'' कुश चिल्लाता रह गया।

तभी उसकी बहन मालवी पहुँच गई- ''यह क्या चिल्ला रहे हो, नींद में किसे सुना रहे हो?'' कुश की अब आँखें खुल गई।

वह सकुचाता हुआ बोला ''नया वर्ष शुभ हो दीदी!'' ''वह तो तुमने आधी रात को ही कर दिया था, चलो कोई बात नहीं।'' कहते हुए मालवी वहाँ से प्रस्थान कर गई।

अब कुश स्वप्न में पधारे नववर्ष के बारे में सोचने लगा। वह नववर्ष की सीख का अवश्य पालन करेगा।

- इन्दौर (म. प्र.)

राजकीय मछलियाँ

उड़ीसा की राजकीय मछली

महानदी महसीर

– डॉ. परशुराम शुक्ल

ऊँचे, हिम पर्वत की मछली,
महानदी में रहती।
आकर हीराकुण्ड देख लो,
हम बच्चों से कहती।।

भारी भरकम बड़ी निराली,
दो गज इसकी काया।
आँखें बड़ी और मुँह चौड़ा,
देखो इसने पाया।।

मछली, मेंढक, कीट-पतंगे,
बड़े शौक से खाती।
पेड़ों के फल, बीज, बेरियाँ,
से भी काम चलाती।।

नदियों पर ऊपर चढ़कर यह,
तल में अंडे देती।
धारा के विपरीत तैर कर,
अपना परिचय देती।।

मानव ने इसका शिकार कर,
संकट ग्रस्त बनाया।
और उड़ीसा के संरक्षण,
से नवजीवन पाया।।

– भोपाल (म. प्र.)

कविता

रंगीली होली

– राजेंद्र निशेश

रंगों की मस्ती में चहकी
रंग-रंगीली होली आई।

पिचकारी की धारा चलती
हर मुखड़े पर मस्ती छाई।

नीले, पीले, हरे, गुलाबी
जमकर सबने धूम मचाई।

धूम-धड़ाके, बँटते हाँसे
हर आंगन में खुशियां लाई।

गिले-शिकवे सभी है भूले
जात-पात ने मुँह की खाई।

पुप्पों की भीनी-सी खुशबू
सरसों खेतों में मुस्काई।

लड्डू, गुझिया और जलेबी
बाँट रही हैं चाची-ताई।

– चण्डीगढ़ (हरियाणा)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

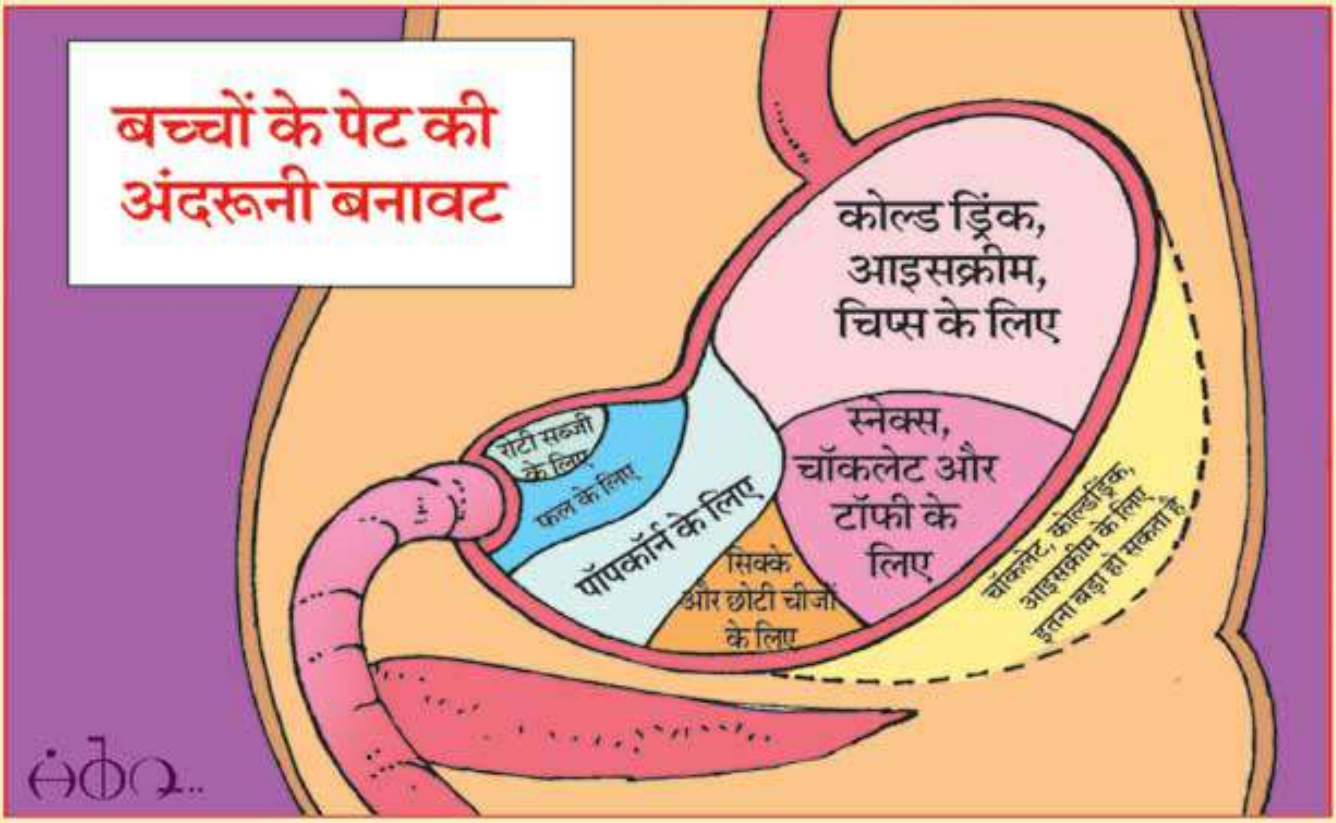

मातृभूमि, मात्र भूमि नहीं

– राजा चौरसिया

सरस्वती अपने गाँव के हाईस्कूल में पढ़ती थी। घर में माता, पिता, भाई और बहन, इस प्रकार चार लोगों का परिवार था। आयु में उससे बड़े भैया कन्हैया ने ही उसका यह नाम बहुत सोच–समझकर रखा था। सरस्वती जथा नाम तथा गुण का उदाहरण थी। उसे जी से चाहने तथा सराहने वाली महिलाओं की संख्या अधिक थी। वे अक्सर यही कहा करती थीं– ''हमारी सरसुती तो फूलों से तौली जाने लायक लाड़ली मोड़ी है। यह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की से गाँवभर को खूब धन्य जरूर करेगी।''

कन्हैया शहर के कॉलेज में अध्ययन करता था। वह प्राय: शनिवार को साँझ होने तक घर आकर ही रहता था। इस बार अँग्रेजी कैलेंडर के अनुसार ३१ दिसम्बर को आया। पूस की हाड़ कपाऊ प्रचंड ठंड होने के कारण सिसियाते हुए भी आपस में कुछ बतियाते हुए दोनों भाई–भगिनी रात में गाढ़ी नींद में कब सो गए, उन्हें पता ही नहीं चल पाया।

दूसरे दिन मुँह अँधियारे अर्थात् मिनसारे गाँव के मंदिरों में बजते हुए घंटे और घंटियों की तेज आवाज अचानक चहुँ ओर गूँजने लगी तो वे दोनों भाई–बहन चौंकन्ने से जाग गए।

उनके लिए यह अचंभा शायद पहली बार ही था। पता चला कि आज १ जनवरी को नए साल की शुरुआत के उपलक्ष्य में यह जोरदार तमाशा हो रहा है। गँवई लोगों ने बहुत मिठाई चढ़ाई और फिर उसे भगवान का प्रसाद कहकर जमकर खाया भी खिलाया भी।

पहली बार लड़के–लड़कियों को ठंड की ठिठुरन के बाद भी पटाखे चलाते देख–सुनकर जो सरस्वती हैरान होकर बोल पड़ी– ''भैया! स्वदेशी चोंच विदेशी दाना, इस बढ़ते नए चलन की देखा–देखी का कैसा जमाना! उल्टी गंगा बहने लगी है।''

सरस्वती के इतना कहते ही कन्हैया भला कैसे चुप रहता–''हाँ! मैं तुम्हारे मन की पूरी बात को समझ गया।''

''क्यों?''

''खग जाने खग ही की भाषा। अपने उत्सवी भारतीय संस्कारों के अपार भंडार के रहते हुए भी नदी किनारे घोंघा प्यासा की कहावत को चरितार्थ होते देखकर ऐसा लगता है कि हम केरल कथनी में भारतीय हैं, लेकिन करनी में अभारतीय हो रहे हैं। यह गर्व की नहीं शर्म की बात है।''

आकाश में सूरज के बाँसभर चढ़ते ही उन दोनों ने देखा कि बहुत से नासमझ उजड्ड किस्म के नए लड़के सड़कों के बीचों–बीच बड़े–बड़े अक्षरों में कूँची से लिख रहे हैं– ''हैप्पी न्यू ईयर २०२३ की

हार्दिक शुभकामनाएँ।'' और उन्हीं शुभकामनाओं को जूतों, लातों के साथ वाहनों से भी रौंदा जा रहा है। आखिर भारतवर्ष का नया वर्ष कहाँ चला गया। इस बारे में किसी को सोचने तक की फुरसत नहीं थी।

''मेरा विचार है कि हम आने वाली चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि पर गाँव में अपने विक्रम संवत् के शुभारंभ को थोड़ा धूमधाम से मनाएँ और असलची देश के नकलची चोचलेबाजों को बताएँ कि अपने भूल को भूल जाना गुलामी का प्रतीक है। हमारे सनातन पुरातन संस्कारों की धरोहर के अनुकूल ही उत्सव मनाना शोभा देता है। माँ भारती की आरती न उतारकर उसका पानी उतारना अपनी माटी की परिपाटी के प्रति अन्याय है।'' सरस्वती के ये मर्म स्पर्शी वचन सुनकर दूरदर्शी कन्हैया भला अपने मुँह में दही जमाए कैसे रह सकता था।

''तुम्हारा कहना सौ टंच सच है कि हमें अपने संस्कारों के साँचे या साँचे में ढालकर ही भारतीय पर्व गर्व के साथ मनाना चाहिए, लेकिन वह अनिवार्य कार्य को संपन्न करना टेढ़ी खीर हैं।''

''अच्छा! तो क्या वे सूक्तियाँ झूठी हैं?''

''कौन सी?''

''मुश्किल नहीं है कुछ भी, गर ठान लिया जाए। इच्छा–शक्ति प्रबल है, तो हर सवाल का हल है। बीमार को अनार न देना उसकी हँसी उड़ाना है। वे पेड़ हरे नहीं रह पाते हैं, जो अपनी जड़ों को भूल जाते हैं। पिछड़ेपन के अँधियार में ज्ञान का उजियार भरना क्या समाज–धर्म नहीं है? हम दोनों भाई–बहिन अपनी जन्मभूमि की दशा को दिशा देना अपना कर्त्तव्य मान सकते हैं।''

''तुमने बड़ी प्रेरक चीजें सुनाई, मगर आज के बदले हुए जमाने में सीधे उपदेश न देकर संकेत के द्वारा ही संदेश देने की आवश्यकता है। जब तक अपने लोगों को अपनी धरोहर की महत्ता का बोध न कराया जाएगा तब तक गुड़ का सपना गोबर ही कहलाएगा।''

''भैया! कुछ और बताओ, ताकि हमें कामयाबी की वह चाबी मिल जाए, जिसकी हर सूरत में बड़ी जरूरत है।''

''जहाँ चाह वहाँ राह।'' कन्हैया ने इसके आगे बहुत सही बात कही– ''उद्देश्य को पूरा करने के वास्ते आज रास्ते ही रास्ते हैं। मैंने फेसबुक में यह पढ़ा है कि अगर बच्चे को उपहार न दो तो वह थोड़ी देर तक ही रोएगा, मगर उसे संस्कार न दो तो वह जिंदगी भर रोएगा।''

अंत में यह तय हुआ कि वे दोनों जब संवत्सर की पृष्ठभूमि के रूप में विश्वसनीय जानकारियाँ एकत्रित व संकलित करेंगे। 'जिन खोजा तिन पाइयाँ।' वाली कहावत भी ध्यान में धरेंगे।

सरस्वती को फिर अपनी सहेली चमेली की याद आई तो वह चहक उठी, क्योंकि वह जानती थी

इसके बाद यह भी याद आया कि भारतीय संस्कृति पर आधारित नए विक्रम संवत् के समय प्रकृति का रूप बहुत सुंदरतम रहता है। अमराई के बौर के झूमर जैसे झूमते गुच्छे, मनोहर गुलमोहर एवं अमलतास के फूलों से वन–उपवन के दृश्यों में बसंत बहार की सुगंधित बयार मन के तार–तार बजाती है। खेतों में गेहूँ की गदराई बालिया हल्दिया सरसों और जंगल में पलाश के लालमलाल फूल। इस प्राकृतिक उत्सव और भारतीय नववर्ष के प्रारंभोत्सव का तालमेल कितना अनुपम रहेगा।

परदेशी कैलेंडर के अनुसार २२ मार्च के आते–आते सरस्वती बहन ने संबन्धित सूक्तियों व तथ्यों को अपनी डायरी में उतार लिया जैसे– ''१ जनवरी का कैलेंडर बदलें, लेकिन संस्कृति और संस्कार न बदलें। सभी धार्मिक तीज–त्यौहार विक्रम संवत् पंचाग की तिथियों के अनुसार मनाए जाते हैं। आजकल का यह नया वर्ष स्वीकार नहीं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही हमारा नया वर्ष प्रारम्भ होता है।

मातृभूमि, मात्र भूमि नहीं है। यह उत्सवों की जननी है। पश्चिमी और पूर्वी नववर्ष में अंतर है। चैत्री नूतन वर्ष सूर्योदय से प्रारम्भ है जबकि पाश्चात्य नूतन वर्ष मध्यरात्रि से ही मान्य है। ''माता भूमि:'' से जुड़े इस सनातनी नववर्ष की शुरुआत सादगी से ही करना है। विश्वगुरु और सोनचिरैया रहे भारत में अपनी भारतीयता का दम भरना है।''

उधर कन्हैया ने अब तक ये मूल बातें अपनी डायरी में नोट कर ली थीं– ''हर्षोल्लास से जो हिन्दू नववर्ष का श्री गणेश होता है, उसी दिन को महाराष्ट्र में गुढ़ी पाड़वा और मालवा में गुड़ी पड़वा के नाम से मनाया जाता है। इसे सृष्टि की रचना का प्रथम दिवस भी कहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का राजतिलक, आर्य समाज की स्थापना, केशवराव हेडगेवार, भगवान झूलेलाल आदि के जन्मदिन की मणिमाला, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी का शंखनाद है। यह उत्सव भारतभूमि, संस्कृति और प्रकृति का त्रिवेणी संगम नव विक्रम संवत्सर है। यह हमारी, मातृभूमि है, जो मात्र भूमि नहीं है।''

सरस्वती और कन्हैया ने जब अपनी–अपनी डायरी के उद्धरण साझा किए तो वे आत्मिक प्रसन्नता से सराबोर हो गए।

''भैया! तुम मुझसे ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हो, इसलिए यह बताओ कि उस शुभ दिन को तुम्हारे विचार से कैसे मनाया जाए?''

उस दिन मैं गाँव की चौपाल में नतमस्तक होकर हाथ जोड़कर सबसे यही चिरौरी करूँगा– ''इस पर्व को सभी लोग संकल्प दिवस के रूप में मनाएँ। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, वातावरण का शुद्धिकरण, पॉलीथिन का उपयोग न करना, हरियाली बढ़ाकर साँसों की उम्र बढ़ाना, भक्ति और शक्ति की भारतीय जन्मभूमि की ऐतिहासिक गाथा का गुणगान करना है।''

फिर ''धीरज धरे सो उतरै पारा'' के फलस्वरुप चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि के शुभागमन का दिनांक २२ मार्च आ ही गया। आम के पत्तों से सजे वंदनवारों तथा मंगल कलश से पर्व की दिव्य शोभा में बढ़ोत्तरी हो चुकी थी। भाई–बहन के जनसम्पर्क से उत्सुक जनसमुदाय भाव–विभोर था।

उन दोनों के उद्‌बोधन के उपरांत सारे उत्साही लोग एक–दूसरे को तिलक लगाकर नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ दे रहे थे– ''ईश्वर से है यही विनय, संवत्सर हो मंगलमय।'' यह सुनकर कन्हैया का मन सुमन था। सहेली चमेली के संग नाच रही सरस्वती को देखकर गाँव के बेटे–बेटियाँ मुग्ध हो गए।

ऐसे अद्वितीय पर्व से अति प्रसन्न हुए पूज्य वृद्धों ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया जो प्रसाद के समान था।

– उमरियापान (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल द्वारा रचित बच्चों के लिए प्रस्तुत दो नए बाल कविता संग्रह-

खाओ फल पाओ बल

मूल्य ४५०/-

जैसा कि पुस्तक के नाम से ही उजागर है यह कविताएँ फलों पर केन्द्रित है आकर्षण की विशेष बात तो यह कि ये दो-चार फल नहीं पूरे ५८ फलों का परिचय गुण स्वाद आदि का ब्यौरा देती पुस्तकें है। बच्चों के लिए यह निश्चित ही बहुत ज्ञानवर्द्धक है।

प्रकाशन- फ्रंट पेज पब्लिशर्स, १३७६ सेकंड फ्लोर कश्मीरीगेट, दिल्ली-११०००६

हँसी मुफ्त का टॉनिक

मूल्य ४५०/-

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' हिन्दी बाल साहित्य के जाने माने रचनाकार हैं। बाल मन को रुचने वाली रचनाओं का सतत् सृजन करते हुए आपने इस बार आपके लिए लिखीं है बाल पहेलियाँ। जो आपका मनोरंजन तो करेंगी ही आपकी तर्क शक्ति भी बढ़ाएंगी।

प्रकाशन- अमातरा पब्लिकेशन्स १३७६, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

सपनों की दुनिया

मूल्य १५०/-

प्रख्यात बाल कहानीकार श्री पवनकुमार वर्मा द्वारा लिखी गई १० मनोहारी बाल कहानियाँ उनकी इस पुस्तक में संकलित हैं। सभी कहानियाँ सुरुचिपूर्ण एवं उद्देश्ययुक्त है।

प्रकाशन- विकल्प प्रकाशन २२२६/बी, गली नं.-३३, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-११००९०

अपना देश संवारें

मूल्य ८०/-

अक्षत अरविंद आप जैसे छोटे बच्चे हैं लेकिन बहुत सुन्दर बच्चों की कविताएँ लिखते हैं। यह उनकी पहली बाल कविताओं की पुस्तक है। बड़ों की रचनाएँ तो आप खूब पढ़ते हैं, पर इस नन्हें रचनाकार को पढ़ना एक अलग ही आनंद देगा।

प्रकाशन- दिशा इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, भन्ना ताजा, पी. एस. राबूपुरा, ग्रेटर नोएडा-२०३२०९ (उ. प्र.)

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' देवपुत्र गौरव सम्मान से सम्मानित

इन्दौर। ९ फरवरी २०२३ को देश के प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' शाहजहाँपुर उ. प्र. प्रसिद्ध बाल पत्रिका देवपुत्र द्वारा प्रतिष्ठित देवपुत्र गौरव सम्मान से सम्मानित किए गए। समारोह की अध्यक्षता प्रदेश के स्कूली शिक्षा मंत्री मा. इंदरसिंह परमार ने की। कार्यक्रम के विशेष अतिथि और मुख्य वक्ता विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. किशनवीर सिंह शाक्य, नोएडा थे।

स्थानीय देवपुत्र सभागार में आयोजित इस गरिमामय आयोजन में इस वर्ष का बाल साहित्य जगत का प्रतिष्ठित देवपुत्र गौरव सम्मान नगर, एवं बाहर के वरिष्ठ साहित्यकारों एवं प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थिति में प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' को ३५ हजार रुपये की सम्मान निधि, मानपत्र एवं शाल श्रीफल प्रदान किए गए। समारोह के आरंभ में प्रधान संपादक श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना ने प्रास्ताविकी एवं स्वागत भाषण देते हुए देवपुत्र के उद्देश्य एवं विस्तार पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि देवपुत्र गौरव सम्मान सम्पूर्ण देश में बाल साहित्य में विशेष अवदान के लिए प्रतिवर्ष किसी एक वरिष्ठ बाल साहित्यकार को प्रदान किया जाता है यह बाल साहित्य का निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा सम्मान है। पत्रिका के संचालक सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर जी चितलांग्या ने समारोह में अपने उदगार और देवपुत्र की कार्य योजना प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार, कोषाध्यक्ष श्री मोहनलाल गुप्ता, प्रबंध संपादक श्री शशिकांत फड़के, प्रांत संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्रा, श्री निखिलेश माहेश्वरी एवं श्री अम्बिकादत्त कुण्डल ने किया। स्मृति चिह्न विद्या भारती के नगरीय शिक्षा प्रांत प्रमुख श्री पंकज पंवार एवं प्रादेशिक सचिव श्री प्रकाश धनगर तथा मध्य भारत प्रांत के नगरीय शिक्षा प्रांत प्रमुख श्री राम भावसार ने किया। संगठन मंत्री विद्या भारती मध्यक्षेत्र श्री भालचन्द्र रावले की गरिमामय उपस्थिति के साथ नगर के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों श्री राकेश शर्मा (संपादक वीणा), श्री गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण', श्री हरेराम वाजपेयी, श्री अरविन्द जवळेकर, श्री प्रदीप नवीन, पं. रामचन्द्र अवस्थी, श्रीमती रंजना फतेहपुरकर, स्वदेश के संपादक श्री शक्तिसिंह परमार, डॉ. सुब्रतो गुहा, श्री बी. पी. मिश्रा, डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव एवं डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव सहित अनेक गणमान्य नागरिकों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति से सदन गौरवान्वित हुआ। आरंभ में सरस्वती वंदना श्रीमती नीता भामोतकर एवं उनकी शिष्या ने प्रस्तुत की। आभार प्रदर्शन प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार ने किया। संचालन कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी ने किया।

सम्मानमूर्ति

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ने 'देवपुत्र' की महत्ता व उपयोगिता को रेखांकित करते हुए बाल साहित्य को विश्व को दिशा देने वाला बनाया। आपने कहा कि संस्कारों की शुरूआत ही माँ की लोरी के रूप में बाल साहित्य से होती है। आज बच्चों की पीठ पर भारी बस्ता एक बड़ा संकट है और चिंता यह है कि उनका पढ़ने का अभ्यास कम होता जा रहा है।

आपने बीरबल का प्रसंग सुनकार बताया कि बच्चों को समझना सबसे कठिन कार्य है। सरल लिखना बहुत कठिन है जबकि कठिन लिखना सरल होता है।

विद्यालयों में होने वाली बाल सभाएँ बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के बाहर भी बाल साहित्य की समझ विकसित करने एवं उसके संस्कार पाने का सफल माध्यम है अत: शालाओं में बालसभाएँ पुन: प्रारंभ करना चाहिए। शरीर के विकास में भोजन की भाँति ही मानसिक विकास में बाल साहित्य महत्वपूर्ण है आवश्यक है। आपने बताया कि देवपुत्र के माध्यम से भारतीय बाल साहित्य में सर्वाधिक शोध हुए हैं ये औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार के हैं। आपने देवपुत्र के विकास में श्री अष्ठाना की भूमिका को विशेष महत्वपूर्ण बताया।

मुख्य वक्ता

आयोजन के मुख्य वक्ता डॉ. किशनवीर सिंह शाक्य ने बताया कि 'देवपुत्र' राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप ही साहित्य प्रकाशित कर रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बाल साहित्यकारों का साहित्य निर्माण की दृष्टि से बड़ा योगदान है। सार्थकता, निष्ठा, दिशा व स्वयं प्रकाशित बनाने में बाल साहित्य बच्चों का अभ्युदय करता है बच्चों को अवसाद ग्रसित होने से बचाता है। आपने देवपुत्र को विद्या प्रवेश के लिए महत्वपूर्ण बताया शेयरिंग नॉलेज ही शिक्षा है। बच्चों को बाल साहित्य ही राष्ट्र से जोड़ता है। शिक्षा का प्रायोगिक होना आवश्यक है। क्वालिटी एज्यूकेशन के लिए शिक्षा में बालसाहित्य आवश्यक है। बच्चों को ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वतंत्रता देना चाहिए।

समारोह अध्यक्ष

मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री इंदरसिंह परमार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लम्बे समय से चल रही साधना एवं सुचिंतन का परिणाम बताया। आपने इसे बहुत पहले लागू होने की आवश्यकता थी यह बताया। क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम बनाने में बाल साहित्यकारों की भूमिका को अनिवार्य बताया। देवपुत्र की भूमिका इस संदर्भ में महत्वपूर्ण बताई।

बिन्दु मिलाओ–रंग भरो

– राजेश गुजर

रवि नायटू का विस्मयकारी भारत

वेल्लोर (तमिलनाडु) के पास थिरुमलाई कोड़ी की पहाड़ियों पर स्थित दक्षिण भारत का स्वर्ण मन्दिर कहलाने वाले श्री महालक्ष्मी मन्दिर के निर्माण में 15,000 किग्रा. शुद्ध सोने का प्रयोग किया गया है।

मुम्बई में मुकेश अम्बानी का निवास स्थान 'एन्टीलिया', 15,000 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित, विश्व का सबसे महंगा निजी आवास है। 27 मंज़िली, 568 फ़ीट ऊंची तथा 4,00,000 वर्गफुट में फैली यह शानदार इमारत वास्तुकला का एक नायाब नमूना है जिसमें 6 तल तो केवल कार पार्किंग और 3 तल हैंगिंग गार्डन ने ही घेरे हुए हैं।

कर्नाटक में हासन जिले के श्रवणबेलगोला में विन्ध्यगिरी पहाडी की चोटी पर 3347' की उंचाई पर स्थित 12 वर्षों में निर्मित जैन मुनि भगवान् बाहुबली गोमतेश्वर की 57' ऊंची, ग्रेनाइट की एक विशाल अखण्ड शिला से बनी हुई मूर्ति स्थापित है जो 30 किमी. दूर से भी स्पष्ट देखी जा सकती है।

असम के जोरहाट ज़िले में 1360 एकड़ में फैले मोलाई वन का नाम पर्यावरणविद जादव मोलाई पायेंग के नाम पर रखा गया है जिन्होंने अकेले दम पर 30 वर्ष के अपने अथक परिश्रम से यहां की बंजर ज़मीन पर 4 करोड़ से अधिक पेड़ लगाकर इस उजड़े वीरान इलाके को एक हरे-भरे जंगल में बदलने का अद्भुत कार्य कर डाला।

© gyashin@gmail.com/ 0 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२३ | प्रेषण तिथि २८/०२/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

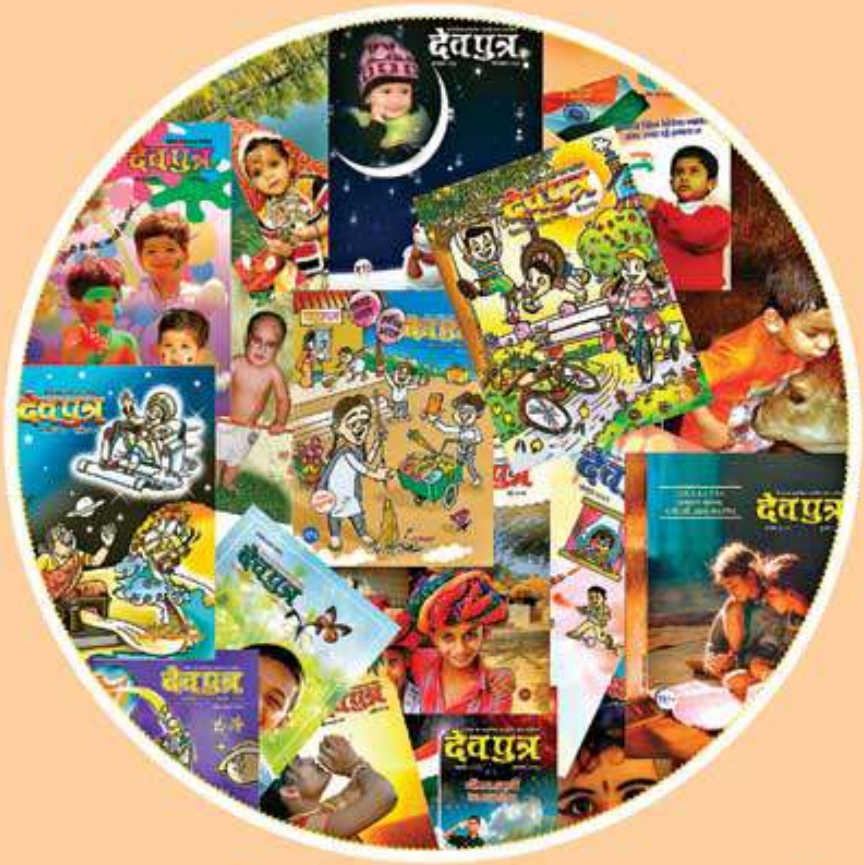

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना